

* लघुकथा *

* लघुकथा *

प्रेम का पाठ

लघुकथा-संग्रह

* लघुकथा *

* लघुकथा *

प्रेम का पाठ

लघुकथा संग्रह

प्रकाशन

अजित गुप्ता

ISBN :

प्रकाशक :

संस्करण : प्रथम, 2010

© लेखक

PREM KA PAATH

Laghu katha sangrah by Ajit Gupta

Published by :

मूल्य :

अपनी बात

आज के दो दशक पूर्व किसी भी पत्रिका के पृष्ठ पलटते समय कहानी या आलेख के बाद शेष बचे स्थान पर कुछ पंक्तियों में चुटकुला या कोई सुभाषित लिखा हुआ होता था। हमारी दृष्टि सबसे पहले उन पंक्तियों पर ही जाती थी। उन्हें हम पढ़ते भी थे और सुभाषितों को सहेज भी लेते थे। लेकिन एक दशक से इस परम्परा में कुछ परिवर्तन हुआ है, इन चुटकुलों और सुभाषितों के साथ एक और विधा आ जुड़ी है और वह है लघुकथा। यह कहानी का संक्षिप्तीकरण नहीं है, अपितु अपने आप में एक नवीन विधा है। हम सबसे पूर्व इन लघुकथाओं को ही पढ़ते हैं। ये लघुकथाएं पत्रिका से निकलकर समाचार पत्रों में भी समा गयी हैं। एक अद्भुत चमत्कृत करने वाले सत्य के दर्शन इन लघुकथाओं के माध्यम से हमें सहेजता से हो जाते हैं। हम इनका कभी-कभी कई घण्टों तक, कभी कई दिनों तक और कभी तो कई वर्षों तक आनन्द लेते हैं।

हमने एक युग में लम्बे अरसे तक दोहों का आनन्द लिया है। कबीर, रहीम से लेकर वर्तमान तक न जाने कितने साहित्यकारों ने दोहों की परम्परा का निर्वहन किया है और सभी ने दोहों के माध्यम से अपने दर्शन को हमारे समक्ष रखा है। दोहों का एक शिल्प है, एक निश्चित सांचा है। दो पंक्तियों में ही विचारक अपनी बात को अनूठे ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत कर देता है और उसका असर न जाने कितने समय तक हमारे मन में बना रहता है। दोहों के बाद हमारे सामने गजल का आविर्भाव हुआ। दोहों के समान ही शेर के माध्यम से गजलकार ने दो पंक्तियों में अपना दर्शन दुनिया को दिया। गजल भी एक निश्चित सांचे में ही ढली। यदि आपको 'बहर' का ज्ञान है तो आपके शेर में वजन है नहीं तो बेकार।

आधुनिक काल में जब पद्य के बाद गद्य ने अपने पैर पसार दिए और साहित्य की विभिन्न विधाएं हमारे सामने आने लगी तब कहानी, उपन्यास, व्यंग्य आदि विधाओं में साहित्य हमारे सामने प्रकट हुआ। वर्तमान में जब नवीन कविता और छंदमुक्त कविता का जन्म हुआ तब लघुकथा का भी जन्म हुआ। व्यक्ति अपनी बात संक्षिप्त में कहना चाहता है, लेकिन उसके पास दोहे या शेर में उस बात को बांधने का सांचा नहीं है, वह अपनी बात को गद्य में ही कहना चाहता है। उसकी बात में वहीं दोहे वाला दर्शन भी है लेकिन बस गद्य में है। तब समीक्षकों ने उसे लघुकथा का नाम दिया। जिस प्रकार दोहे या शेर की अन्तिम पंक्ति में

व्यक्ति चमत्कृत हो जाता है, उसी प्रकार लघुकथा की अंतिम पंक्ति में व्यक्ति चमत्कृत हो जाता है।

कहानी कभी घटना प्रधान होती है, कभी व्यक्तित्व प्रधान। कहानी में कभी समाधान मिलता है तो कभी पाठक पर ही उसके अनुत्तरित प्रश्नों का बोझ आ जाता है। कहानी एक घटना पर या एक व्यक्तित्व पर आधारित हो सकती है, इसी प्रकार उपन्यास हमारे सम्पूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन लघुकथा व्यक्ति की किसी छोटी सी मानसिकता का परिचायक होती है। दुनिया की दृष्टि से उसकी मानसिकता को देखने का दृष्टिकोण भिन्न है लेकिन लघुकथा की अन्तिम पंक्ति उस व्यक्ति की सकारात्मक मानसिकता को उजागर करती है। इसलिए कहा जाता है कि लघुकथा अधिकतर सुखान्त होती हैं।

व्यक्ति की मानसिकता को लघुकथा के रूप में कहने का मैंने भी साहस किया है। साहस इसलिए लिख रही हूँ कि लघुकथा लिखना सरल कार्य नहीं है। इसमें दोहे की तरह तेरह, ग्यारह मात्राओं और गुरु-लघु का ही खेल नहीं है। और ना ही गजल की तरह बहर और वजन का चक्कर है। पाठक के सामने संक्षिप्त में, सहजता से, ऐसी बात रखनी है कि वह चमत्कृत हो जाए। यह भी ध्यान रखना है कि कथानक हास्य रस में परिवर्तित ना हो जाए और चुटकुले की संज्ञा पा जाए। लघुकथा पर मैंने पहले अध्ययन किया और उसके बाद अपनी बात कहने का साहस बटोरा। मैं इन लघुकथाओं के माध्यम से अपनी बात में कितना चमत्कार पैदा कर पायी, इस बात का निर्धारण आप सुधि पाठकों को करना है।

मैंने अपनी कुछ चुनी हुई लघुकथाएं अपने ब्लाग पर भी डाली हैं। उन पर पाठकों की राय मुझे प्राप्त हुई। उसी के बाद प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशित करने का मन बना पायी। मैंने अपनी पूर्ण निष्ठा के साथ एक प्रयास किया है लेकिन परिणाम आपके हाथ में है। इन्हें स्वीकृति मिलेगी या अस्वीकृति यह सब अब आपके हाथ में है। मैंने अपना कार्य पूर्ण किया, अब आपकी बारी है। मैंने अन्य विधाओं में भी लिखा है, आप सभी का स्नेह मुझे मिला है, इसलिए आश्वस्त हूँ कि इस बार भी मैं निराश नहीं होऊँगी।

स्नेहाकांक्षी

अजित गुप्ता

अनुक्रम

1. प्रेम का पाठ
2. प्रभु की पूजा
3. बाबा
4. आम
5. छिलके
6. अपना प्राप्य
7. फिजूल खर्ची
8. महादान
9. रिश्ते
10. आदत
11. भूख
12. सात और एक
13. इनके सहारे
14. अपने
15. शान्ति
16. गरल
17. लेखक
18. पागल
19. प्रबुद्धता
20. पहरें
21. वंशहीन
22. गन्दी मक्खी
23. मित्र
24. सामाजिक कार्य
25. विष वृक्ष
26. बौद्धिक प्रतिभा
27. किसका नरक बड़ा

28. धरती
29. कैदी
30. पुण्य
31. पूजनीय
32. घर
33. भीख
34. सब कुछ तो है
35. अच्छाई
36. तर्पण
37. सिफारिश
38. प्रगतिशील
39. स्मृतिदंश
40. पूजा और कर्म
41. सम्पदा
42. पैसे का मामला
43. तपन
44. चोर
45. गुलाब
46. शब्दों की उर्जा
47. शिक्षा की पहल
48. पाँच दीपक
49. एलबम
50. प्रेम और दण्ड
51. शाकाहारी हाथी
52. रोटी और कुत्ते
53. दुश्मन
54. झगड़ालू
55. अशिक्षित माँ
56. बेल का अस्तित्व

57. भिखारी
58. बेटे ने पुस्तकों को हाथ नहीं लगाया
59. सेवा कार्य
60. सत्ता
61. जिद
62. हम लेते हैं तो देते भी हैं
63. मक्कार लोग
64. विषहीन मेढ़क
65. हिम्मत
66. कौन अधिक विषैला
67. पुण्य का दान
68. बस की टिकट
69. नकली मुठभेड़
70. पैतृक गुण
71. पूजा का प्रसाद
72. स्वाभिमान की रोटी
73. खुशियों के संग
74. विश्वास
75. निपूता
76. राजनीतिज्ञ और साहित्यकार
77. बिन्दी और बिछिया
78. सोने के सिक्के

1 प्रेम का पाठ

सरस्वती अकेली बैठी है, उसकी आँखों में आँसू हैं। कभी धुँधली होती रोशनी से अपने बुढ़ापे को देख रही है, कभी जंग लगते अपने घुटनों को हाथों से सहला रही है। अपने आप से प्रश्न कर रही है कि 'मैंने जीवन में सभी को प्रेम का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया लेकिन आज मैं अकेली क्यों हूँ, मेरा सहारा यह छड़ी क्यों बन गयी है?' वह सूने रास्ते को देख रही थी, जहाँ से शायद उसके बुढ़ापे का सहारा चला आए और उसकी छड़ी को हवा में उछाल दे और बोले, 'माँ मैं तेरी छड़ी हूँ, इसकी तुझे जरूरत नहीं पड़ेगी'। लेकिन दूर तक कोई नहीं है, लेकिन एक परछाई उसकी ओर बढ़ रही है। परछाई पास आती है, वह एक इंसान में बदल जाती है।

वह इंसान उससे पूछता है कि 'तुमने अपने जीवन में प्रेम किस कारण से बाँटा था?'

सरस्वती ने उत्तर दिया, क्योंकि बचपन से ही प्रेम के अभाव की कसक मन में थी।

तुम्हें किसके प्रेम का अभाव था, उसने फिर प्रश्न किया।

सरस्वती ने कहा कि पिता के प्रेम का, पति के प्रेम का।

तुमने अपनी संतान को इसी प्रेम के अभाव का पाठ पढ़ाया?

हाँ पढ़ाया। सरस्वती ने कहा।

तब वे अच्छे पिता बनेंगे और अच्छे पति बनेंगे। वे अच्छे पुत्र कैसे बन सकते हैं? जिसका अभाव तुमने जाना नहीं, उसे तुम कैसे पढ़ा सकती थीं? और जिसका पाठ तुमने पढ़ाया नहीं वह पाठ भला तुम्हारी संतान कैसे पढ़ सकती थी? अतः आज वे अच्छे पिता हैं, अच्छे पति हैं लेकिन अच्छे पुत्र नहीं हैं।

2 प्रभु की पूजा

अपने घर में बने भगवान के आले में अगरबत्ती जलाकर भगवान को प्रणाम करने के लिए मेरे कदम कक्ष तक पहुँच जाते हैं। सामने भगवान की मूरत है, भगवान हँस रहे हैं। मैं उन्हें देख ठिठक जाती हूँ, अगरबत्ती की ओर बढ़े मेरे हाथ रुक जाते हैं। मैं क्यों पूजा कर रही हूँ? मन प्रश्न करता है। क्यों इस नन्हें कृष्ण को नहलाती हूँ? क्यों इसे लड्डू का भोग लगाती हूँ? क्यों इसका शृंगार करती हूँ? एक दिन मेरा मन भी इस नन्हें कृष्ण को पुत्र रूप में पाने के लिए नहीं मचल उठेगा? क्या मेरा मन नहीं करेगा कि इसे छू लूँ, इससे बातें कर लूँ? जब भी मन ने किसी रिश्ते को पकड़ना चाहा क्या वह मेरे हाथ लगा? मन उन रिश्तों की टूटन से कितना द्रवित हुआ था तो एक अपेक्षा फिर क्यों। मैं केवल प्रभु को मेरे मन के अंदर ही रखूँगी, उनको किसी भी रूप में कैद नहीं करूँगी। पट बंद हो गए और साक्षात् दर्शन भी, अब केवल मन की आँखें खुली थीं।

3 बाबा

बड़े दिनों बाद सपना अपने मायके गयी है, भाई के चेहरे पर प्रसन्नता नहीं है, भाभी के चेहरे पर भी नहीं। वह कारण जानना चाहती है, पूछती है कि कोई विशेष बात हुई है? भाई कुछ नहीं बोलता लेकिन भाभी बताती है कि इन दिनों तुम्हारे पिताजी को न जाने क्या हो रहा है? सपना प्रश्नवाचक चिन्ह सा मुँह बनाकर भाभी की ओर देखती है। भाभी बताती है कि उनके गाँव से उनके एक भतीजे का बेटा आता है, उसे हम जानते हैं कि वह बड़ा चालबाज है। तुम्हारे पिता जो कभी किसी को भी एक पैसा नहीं देते, पता नहीं उसने ऐसा क्या जादू किया है कि वे उसे पैसा दे रहे हैं।

सपना पिता के पास जाती है, उनसे पूछती है कि क्या प्रकाश आया था और क्या आपने उसे पैसे दिए हैं?

वह कहते हैं कि हाँ दिए हैं।

फिर वह पूछती है कि आप तो कभी किसी को भी एक पैसा नहीं देते फिर प्रकाश को क्यों? जबकि आप जानते हैं कि वह कितना चालबाज है।

वे बोलते हैं कि वह आकर मुझे बड़े प्यार से 'बाबा' कहकर बुलाता है, मेरे पास आकर बैठता है।

4 आम

गर्मियों का मौसम है, इस बार आम की फसल बहुत अच्छी हुई है तो बाजार में आम बहुत आया है। रोज ही फ्रिज आम से भरा रहता है। आम की बहुलता और घर में सदस्यों की कमी के कारण कई बार कुछ आम खराब भी हो जाते थे। सुनीता के घर नौकर के रूप में एक गाँव का लड़का काम करता है। वह वहीं रहता भी है। कई बार सुनीता का मन होता कि एक आम लड़के को भी दे दे। लेकिन उसकी सास उसका हाथ पकड़ लेती, बोलती कि कहीं नौकरों को आम खिलाए जाते हैं? सुनीता का मन दुखी होता परन्तु लड़का आम की तरफ देखता भी नहीं। एक दिन उसे छुट्टी चाहिए थी, बोला कि गाँव जाना है, सुबह वापस आ जाऊँगा। सुनीता ने उसे छुट्टी दे दी। दूसरे दिन लड़का आ गया, हाथ में उसके एक छोटा थैला था।

सुनीता ने पूछा कि इसमें क्या है?

वह बोला कि मेरे खेत में एक आम का पेड़ है, उसमें केरियां पकने लगी थी, इसलिए मैं दीदी के लिए कुछ चूसने वाले आम लेकर आया हूँ। दीदी को चूसने वाले आम पसन्द है न?

5 छिलके

शहर से 10 किलोमीटर की दूरी पर बसा एक जनजातीय गाँव। अधिकांश लोग या तो खेती करते या फिर शहर में मजदूरी करने आते। एक दिन वहाँ एक कार्यक्रम के निमित्त जाना था। जाते समय, साथ में बच्चों के लिए केले ले लिए। छोटा सा कार्यक्रम रखा हुआ था गाँव वालों के लिए, सारे ही गाँव वाले एकत्र हुए। कार्यक्रम के बाद हमने बच्चों को केले बाँटे। बच्चों ने केले खाए और छिलके वहीं फेंक दिए।

मैंने बच्चों से कहा कि बेटा ये छिलके उठाओ और पास बैठी गाय के सामने डाल दो।

एक वृद्ध व्यंग्यात्मक रूप से बोला कि गायें केले के छिलके नहीं खाएंगी।

मैंने कहा कि ऐसा कैसे हो सकता है? प्रतिक्रिया स्वरूप मैंने बच्चों से कहा कि तुम ये छिलके गाय के सामने डाल दो।

उन्होंने ऐसा ही किया, लेकिन गाय ने छिलकों की तरफ देखा ही नहीं।

मैं अचम्भित थी, फिर मैंने बच्चों से कहा कि ऐसा करो कि जो वहाँ बकरी बैठी है, उसे डाल दो।

बकरी ने छिलके देखकर मुँह घुमा लिया। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा है?

वृद्ध बोला कि गाय और बकरी केले के छिलकों को पहचानती नहीं हैं। इस गाँव में कभी केले आए हों तो गाय भी पहचाने इन छिलकों को।

6 अपना प्राप्य

सुबह उठकर जैसे ही मैंने वाशबेसिन का नल खोला, देखा कि वहाँ से नन्हीं—नन्हीं चीटियाँ कतार बनाकर कहीं चली जा रही हैं, उनकी दो कतारे बनी हुई थीं, एक जा रही थी और एक वापस लौट रही थीं। वापस लौटने वाली चीटियों के मुँह में एक दाना था। मेरी निगाहों ने उनका पीछा किया। निगाहें चीटियों के साथ—साथ चल रही थीं। एक जगह जाकर चीटियाँ रुक गयीं थी, निगाहें भी रुकी। देखा एक छोटा सा मिठाई का टुकड़ा भोजन की टेबल पर पड़ा था, वे सारी चीटियाँ कतारबद्ध होकर उसका एक—एक कण अपने मुँह से पकड़कर वापस लौट रही थीं। कहीं कोई बदहवासी नहीं, रेलमपेल नहीं, बस था तो एक अनुशासन। तभी घर के बाहर शोर सुनायी दिया। बाहर आकर देखा, एक सेठजी के हाथ में मिठाई का डिब्बा था, उनके चारों तरफ मॉगने वालों की भीड़ थी और कुछ बच्चे उनसे छीना—झपटी कर रहे थे। इसी छीना—झपटी में मिठाई का डिब्बा हाथ से छूट गया और सारी मिठाई सड़क पर गिर कर बेकार हो गयी। सेठजी नाराज हो रहे थे और बच्चों पर चिल्ला रहे थे। तभी चीटियों पर मेरी वापस नजर पड़ी, मिठाई के टुकड़े का अस्तित्व समाप्त हो चुका था और चीटियाँ वैसे ही कतारबद्ध लौट रही थीं।

7 फिजूलखर्ची

पानी की समस्या मेरे शहर में विकराल रूप ले चुकी थी। सरकारी नलों में दो दिन में एक बार, एक घण्टे के लिए पानी आता था वह भी कम दवाब से। घरों के बोरिंग भी सूख चले थे। घर में नजर घुमाती तो चारों तरफ लगे नल मुझे चिढ़ाते। आदतों से लाचार हमें वाशबेसिन के नल या टॉयलेट के नल फिजूलखर्ची करते बच्चे से लगते। लेकिन वे भी हमारी जरूरत थे, हम उन्हें बंद नहीं कर सकते थे। ऐसे ही एक दिन मैं, पानी की समस्या से जूझ रही थी। मुँह में टूथ—पेस्ट का झाग भरा था और वाशबेसिन से पानी नदारत। मैं झुंझला उठी। इतने में ही दरवाजे की घण्टी चहक उठी। मैं दरवाजे की तरफ देखती हूँ, बाहर सफाई कर्मचारी खड़ी है। मैं मुँह में झाग भरे, वैसे ही दरवाजा खोल देती हूँ। वह पूछती है कि क्या पानी गया?

मैं कहती हूँ कि हाँ गया।

वह हँसती है, कहती है कि पानी की समस्या केवल आप लोगों की बनायी हुई है, हम तो इस समस्या से ग्रसित नहीं हैं।

मैं पूछती हूँ कि कैसे? क्या तुम्हें पानी नहीं चाहिए?

वह बोली कि हम सुबह उठते हैं, पास के तालाब में जाते हैं, वहाँ स्नान करते हैं, कपड़े भी धोते हैं और पास लगे हैण्डपम्प से एक घड़ा पानी पीने के लिए ले आते हैं। न हमारे यहाँ वाशबेसिन का चक्कर, ना लेट्रीन का चक्कर।

8 महादान

कुछ वर्ष पूर्व राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में अकाल पड़ा हुआ था। हमने अपनी संस्था के माध्यम से गाँवों में कुएं गहरे कराने का कार्य प्रारम्भ किया। किसान के पास इतना पैसा नहीं था कि वह स्वयं अपने कुओं को गहरा करा सके। जनजाति समाज के स्वाभिमान को देखते हुए रूपए में से पच्चीस पैसे किसान से भी लिए गए। किसानों ने अपना हिस्सा अग्रिम रूप से जमा करा दिया। बारी-बारी से सभी के कुएं गहरे कराने का काम प्रगति पर था। कुएं अधिक थे और समय कम। मनुष्य जब प्रयास करता है तब प्रकृति भी उसका साथ देती है, इसी कारण काम पूरा होने से पूर्व ही वर्षा ने अपनी दस्तक दे दी और रामदीन के कुएं में भी पानी की आवक हो गयी। रामदीन उस दिन बहुत खुश था। क्योंकि उसके कुएं में पानी आ गया था। अकाल के समय कैसे पाई-पाई जोड़कर उसने पैसे एकत्र किए थे? भगवान ने उसकी सुन ली थी। हमारा काम भी बंद हो गया था। हम उसे पैसे वापस करने के लिए गए। उसने कहा कि मुझे पानी चाहिए था और प्रभु ने मेरा काम कर दिया। अब मैं इस पैसे का क्या करूंगा? आप इसे कहीं और लगा दे, और उसने पैसे वापस लेने से मना कर दिया।

9 रिश्ते

एक दिन उदयपुर से आबूरोड की यात्रा बस से कर रही थी। जनजातीय क्षेत्र प्रारम्भ हुआ और एक बीस वर्षीय जनजातीय युवती मेरे पास आकर बैठ गयी। मेरा मन कहीं भटक रहा था, टूटते रिश्तों को तलाश रहा था। मैं सोच रही थी कि क्या जमाना आ गया है कि किसी के घर जाने पर मुझे आत्मीय रिश्तों की जगह औपचारिकता मिलती है और सुनने को मिलता है एक सम्बोधन – आण्टी। इस सम्बोधन से 'हम एक परिवार नहीं हैं' का स्पष्ट बोध होता है। मुझे बीता बचपन याद आता, कभी भौजाईजी, कभी काकीजी, कभी ताईजी, कभी बुआजी, कभी जीजीबाई आदि सम्बोधन मेरे दिल को हमेशा दस्तक देते हैं। लेकिन आज मेरे आसपास नहीं थे ये सारे ही। मेरे समीप तो रह गया था शब्द, केवल आण्टी। इन शब्दों के सहारे हमने दिलों में दूरियां बना ली थी।

मैं किसी कार्यक्रम में भाग लेने जा रही थी और मुझे वहाँ क्या बोलना है इस बात का ओर-छोर दिखायी नहीं दे रहा था। इतने में ही झटके के साथ बस रुकी। एक गाँव आ गया था। नवम्बर का महिना था और उस पहाड़ी क्षेत्र में इस महिने बहुतायत से सीताफल पकते थे। अतः बाहर टोकरे के टोकरे सीताफल बिक रहे थे। मेरे पास बैठी युवती बस से उतरी और हाथ में सीताफल लेकर बस में वापस चढ़ गयी। उसने एक सीताफल तोड़ा और मेरी तरफ बढ़ाते हुए बोली कि 'बुआजी सीताफल खाएंगी'?

10 आदत

मेरा नौकर नारायण जनजातीय समाज का था। इस समाज में सुबह काम पर निकलते समय और शाम को काम से वापस आने के बाद ही भोजन करने की आदत है। ऐसी ही आदत नारायण की भी थी। मेरे यहाँ वह सुबह नौ बजे आता और शाम को चार बजे जाता। दिन में हम सब को वह भोजन कराता, लेकिन स्वयं नहीं खाता। मैं उससे हमेशा कहती कि खाना खाले, लेकिन नहीं खाता। एक दिन मैंने डाँटकर उसे कहा कि खाना क्यों नहीं खाता? सारा दिन यहाँ काम करता है और मुँह में दाना भी नहीं डालता, कैसे काम चलेगा? तब वह बोला कि हम लोग दो समय ही खाना खाते हैं, एक सुबह और एक शाम। सुबह मैं खाना खाकर आता हूँ और शाम को जाकर खाऊँगा। यदि दिन में आपके यहाँ खाना खाने लगा तो मेरी आदत बिगड़ जाएगी।

11 भूख

एक गाँव में एक जमींदार रहता था। जमींदार ने उस गाँव में एक मंदिर बनाया। उसी गाँव में एक पिता और पुत्र रहते थे। एक दिन दुर्घटना में पिता की मृत्यु हो गयी और पुत्र अनाथ हो गया। जमींदार ने मृत व्यक्ति के पुत्र को मंदिर का पुजारी बना दिया। एक दिन जमींदार ने पुजारी को कहा कि देखो मैंने तुम्हें पुजारी बनाया है इसलिए अब तुम्हें मेरे लिए काम करना होगा। पुजारी ने कहा कि आप जो भी कहेंगे, मैं काम करूँगा। जमींदार ने कहा कि तुम्हारे मंदिर में सभी लोग दूर-दूर से आते हैं। तुम उनमें से अमीर व्यक्ति को पहचान कर उनका अपहरण करवा लो। मेरे आदमी तुम्हारे साथ रहेंगे। पुजारी ने पूछा कि मैं उस व्यक्ति को रखूँगा कहाँ? जमींदार ने कहा कि मंदिर में। यही स्थान सबसे सुरक्षित है। अब पुजारी जमींदार के आदमियों के साथ मिलकर अपहरण करने का कार्य करने लगा। एक दिन जब वह एक धनाढ्य व्यक्ति का अपहरण करके मंदिर में पूजा कर रहा था तभी एक बारह वर्षीय बालक उसके पास आया और रोने लगा। उसने पूछा कि दोस्त क्यों रोते हो? पुजारी भी अभी युवा ही था अतः उसने दस बालक को दोस्त कहा। बालक ने कहा कि आप मेरी मदद कीजिए और मेरे पिता को वापस लौटाने के लिए भगवान से प्रार्थना कीजिए। यदि मेरे पिता नहीं आए तो मैं अनाथ हो जाऊँगा, मेरे रिश्तेदार हमारा सारा धन हड़प लेंगे और मैं भिखारी बन जाऊँगा। पुजारी उसकी बात सुनकर सकते में आ गया, वह सोचने लगा कि एक दिन मैं भी सड़क पर था और जमींदार ने मुझे पुजारी बना दिया था। आज मैं उसके कहने पर पाप कर्म में लीन हो गया हूँ। क्या इस बालक का भी यही हश्र होगा? उसे आत्मग्लानी होने लगी और उसने बालक को कहा कि जाओ सारे गाँव वालों को बुला लाओ। गाँव वालों के सामने उसने अपना अपराध स्वीकार किया और जमींदार की करतूत भी बतायी। सभी लोग जमींदार के घर पहुंचे और उसे बंदी बना लिया।

जमींदार के सामने रूपए, पैसों का ढेर लगा दिया गया और उससे कहा गया कि अब आज से तुम्हें केवल पैसे ही खाने हैं। एक दिन बाद ही जमींदार रोटी के बिना भूख से व्याकुल होने लगा लेकिन किसी ने भी उसे रोटी नहीं दी। जमींदार एक खुले बराण्डे में रस्सियों से जकड़ा बैठा था और सारे गाँव वाले उस पर हँस रहे थे। सभी उसे रूपए-पैसे खाने को कह कर उसका मजाक उड़ा रहे थे। उस भीड़ में एक बालक भी था, उसके पास अपने स्कूल के बस्ते में खाने का डिब्बा था। वह भीड़ को चीरता हुआ जमींदार के पास पहुंच गया और उसने उसके सामने रोटी रख दी।

वह बालक जमींदार से बोला कि आप ये रूपए, पैसे कैसे खा पाएंगे? लीजिए, रोटी खा लीजिए, रोटी से ही पेट भरता है। मुझे भी जब भूख लगती है तब मैं भी रोटी ही खाता हूँ। मैं छोटा बच्चा हूँ और मुझे यह बात समझ आती है और इतने बड़े होकर भी आप को यह बात समझ नहीं आयी?

12 सात और एक

अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में एक तीन वर्ष का बालक मौत से जूझ रहा था। तीन मंजिल से नीचे सकरी, पक्की गली में सिर के बल वह गिर पड़ा था, गिरते ही सिर फट गया। वह काल आजादी के पूर्व का था और उस समय उस अस्पताल में डाक्टर अंग्रेज था। डाक्टर ने बालक के पिता को कहा कि आपरेशन करना है, लेकिन जान को खतरा है और अनेक समस्याएं भी पैदा हो सकती हैं। बालक के पिता ने कहा कि नहीं आपरेशन कर दो। कुछ ही देर में उस आपातकालीन वार्ड में एक और बालक लाया गया, वह भी गम्भीर रूप से घायल था। उसकी माँ विलाप कर रही थी, वह इकलौता बेटा था। पहले वाली बालक की माँ भी अपने बेटे के साथ ही थी वह भी विलाप कर रही थी। जहाँ अभी आया बालक इकलौता था वहीं पहला वाला बालक उस माँ का सातवां पुत्र था। दोनों बालकों के आपरेशन की तैयारी चल रही थी।

दोनों ही माँएं प्रार्थना करने लगी पहले वाली माँ बोली कि हे भगवान मेरे एक मात्र लाल को बचा ले।

दूसरी माँ प्रार्थना कर रही थी कि हे भगवान मुझे तूने सात पुत्र दिए, लेकिन इसे एक ही दिया है। यदि मेरा एक पुत्र चला भी गया तो कोई बात नहीं होगी, बस तू इसके पुत्र को बचा ले।

13 इनके सहारे

डाइनिंग टेबल से आती आवाजों के स्वर तेज से तेज होते जा रहे थे। सुबह—सुबह उस आनन्द आश्रम से आते तीखे स्वरों को सुनने के लिए मैंने कान लगा दिए।

डाक्टर पत्नी कह रही थी कि तुमसे कितना ही कह दो, तुम अपनी ही करते हो, तुम्हें क्या जरूरत थी पेम्पलेट छपवाने की?

मैंने वाकया जानना चाहा और उन दोनों के बीच पड़ते हुए पूछ ही लिया कि माजरा क्या है? सुबह—सुबह क्यों अमृतवाणी की वर्षा हो रही है?

पत्नी बोली कि क्या बताऊँ, मैं इनसे परेशान हो चुकी हूँ, सारा दिन खटती हूँ और पैसा कमाती हूँ, लेकिन इन्हे पैसे की कद्र ही नहीं है। वे आँखों में आँसू भरकर बोली कि तीन दिन पहले एक वयोवृद्ध डाक्टर मेरे पास आए, वे बोले कि क्या मुझे आपके नर्सिंगहोम में प्रेक्टिस के लिए जगह मिल सकती है? मैं टी.बी. रोग का विशेषज्ञ हूँ और फालतू समय में चिकित्सा के माध्यम से सेवा करना चाहता हूँ।

मुझे लगा कि एक वयोवृद्ध चिकित्सक को अपने अस्पताल में चिकित्सा के लिए कक्ष देने में बुरा क्या है? इन्हें नर्सिंगहोम में एक कक्ष दे दिया तो इनका समय निकल जाएगा। मैंने उनसे कहा कि आप यहाँ बैठे और रोगियों की सेवा करें। जितने भी रोगी आते हैं, उनका शुल्क आप ही रखें, हमें आपसे कमीशन नहीं चाहिए।

फिर वे बोले कि मेरे प्रचार का क्या होगा? मैंने उनसे कहा कि जब हम आपसे कोई कमीशन नहीं ले रहे हैं तब आप स्वयं ही अपना प्रचार करें।

लेकिन आज देखती क्या हूँ कि उनके प्रचार के पेम्पलेट मेरे पति ने ही छपवा लिए हैं।

डाक्टर पति बोल रहे थे कि उन वयोवृद्ध चिकित्सक ने मुझसे कहा कि अभी मेरे पास पैसे नहीं हैं, अतः आप छपवा दें, मैं पैसे बाद में दे दूंगा।

पत्नी ने कहा था कि ये पैसा बेकार जाएगा और अस्पताल की प्रतिष्ठा पर दाव भी लगेगा अलग से। पहले भी ऐसा कई बार हो चुका है। मैं दावे से कह रही हूँ कि वे बीस किलो मीटर से चलकर प्रतिदिन यहाँ नहीं आ सकते। बुढ़ापे में

जोश आ गया और यहाँ आ गए लेकिन रोज—रोज इतनी दूर आना सम्भव नहीं है।

क्या मैं एक वृद्ध डाक्टर की मदद नहीं करूँ? पति चिल्लाए।

प्रश्न मदद का नहीं है, अस्पताल की प्रतिष्ठा का है। वे कुछ दिन आए तो पेम्पलेट छपवा देंगे।

लेकिन दो—तीन दिन व्यतीत हो गए, वे डाक्टर नहीं आए। मालूम किया गया, तो पता लगा कि सेवानिवृत्ति के बाद वे घर पर बेटे—बहु के साथ ही रहते हैं। एक दिन उन्हें बेटे—बहु ने जमकर लताड़ा, उन्होंने सोचा कि घर पर रहने से तो अच्छा है कहीं चिकित्सा करके सेवा का काम करूँ और निकल पड़े चिकित्सा करने के लिए। उनका प्रचार शहर में हो गया था कि वे रोगियों की सेवा करेंगे। जब बेटे—बहु को मालूम पड़ा तो उन्होंने आपत्ति उठायी क्योंकि उन्हें घर और बच्चों की देखभाल करने वाला एक व्यक्ति फोकट में मिल गया था। इस कारण उनका स्वाभिमान पूर्वक जीना उन्हें पसन्द नहीं आया और उन्होंने अपने वृद्ध पिता से स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि आपको अब कहीं नहीं जाना है।

एक दिन वे डाक्टर दम्पति को मिल गए तब वे आँसू भरकर हाथ जोड़ते हुए बोले कि क्षमा चाहता हूँ, बेकार ही आपके पैसे भी खर्च हुए और आपके अस्पताल का नाम भी खराब हुआ। लेकिन अब मैं इनके सहारे ही हूँ और जैसा ये लोग कहेंगे वैसा ही करना पड़ेगा।

14 अपने

रामकृपालु जी आखिर मंत्री बन गए। विरोधी दल वाले प्रतिदिन नवीन समस्याएं खड़ी करने लगे। विरोधी तो उनके अपने लोग भी थे, लेकिन ऐसे समय वे उनके साथ खड़े दिखायी देते थे। मंत्री जी प्रतिदिन नवीन विवाद को जन्म देते थे, जिससे लोकसभा में विरोधी खेमा उनके विरोध में नारे ही लगाता रहता था। जब विरोधी खेमा एकत्र होता तो उनके पक्ष का खेमा भी एकजुट होकर उनके पक्ष में नारे लगाता। उनकी इस हरकत से उनके दल के अध्यक्ष भी बहुत दुखी थे।

एक दिन हारकर अध्यक्ष ने उनसे प्रश्न पूछ ही लिया कि आप नित-नूतन फसादों को क्यों जन्म देते हैं? क्यों आप हमको चैन से जीने नहीं देते? कल विपक्ष के नेता भी मुझसे आग्रह कर रहे थे कि उन्हें समझाइए।

मंत्रीजी ने कहा कि यदि विरोधी पक्ष मौन हो जाएगा तब अपने ही दल के लोग उनका स्थान ले लेंगे। इस कारण मैं अपनों को विरोध का अवसर नहीं देना चाहता।

15 शान्ति

अरुण प्रकाश शान्ति प्रिय व्यक्ति थे, सरकारी नौकरी में सदैव ही अपने अधिकारियों से प्रताड़ित हुए एवं घर पर अपनी पत्नी से। उनकी पत्नी उन्हें बात-बात पर टोकती थी कि ऐसा करो और ऐसा न करो। सेवानिवृत्ति के बाद वे शान्ति की खोज में लग गए। पहले वे अपना वेतन अपने पास ही रखते थे, इस कारण घर-खर्च को लेकर सदैव पत्नी से झगड़ा होता था, अब उन्होंने सारे वित्तीय अधिकार पत्नी को सौंप दिए। अब घर पर पूर्णतया पत्नी का ही राज चलता था। अब वे बच्चों पर भी ज्यादा ध्यान नहीं देते थे तो धीरे-धीरे बच्चे भी उनके अनुशासन से दूर हो गए। अब बच्चे भी पूर्णतया अपनी माँ पर ही निर्भर हो चले थे। घर में किसी काम में भी उनका न तो हस्तक्षेप था और न ही रुचि, फिर भी उन्हें वांछित शान्ति नहीं मिल रही थी। उन्हें लगता था कि मैं घर में एक फालतू व्यक्ति हूँ। एक दिन घर के काम-काज को लेकर उनके बेटे ने उन्हें काफी कुछ सुना दिया, उन्हें भी गुस्सा आ गया। वे बेटे से तो कुछ नहीं कह पाए लेकिन पत्नी से वे झगड़ पड़े।

उन्होंने कहा कि मैंने सदैव शान्ति चाही है, इसी कारण मैंने सारे अधिकार तुमको दे दिए हैं, लेकिन इसका परिणाम यह निकला कि बच्चे भी मुझे आँख दिखा रहे हैं। यह सब तुम्हारे कारण हो रहा है। तुम अपना प्रभुत्व जमाने के चक्कर में मुझे अपमानित करती हो।

पत्नी ने कहा कि जीवन का नाम शान्ति नहीं है, यदि मैं भी शान्ति की कामना करके अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो जाती तब परिवार संचालन के लिए संघर्ष कौन करता? जीवन के लिए प्रतिपल संघर्ष करने पर जब सफलता प्राप्त होती है तब ही शान्ति मिलती है।

16 गरल

अर्चना जाने-माने विश्वविद्यालय की कुलपति बनी। सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्वार्थों को पूरा करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उनकी प्रशंसा प्रारम्भ की, फिर आग्रह। फल प्राप्त नहीं होने पर उनका आग्रह दुराग्रह में बदल गया। एक दिन विरोध के स्वर मुखरित होने लगे। पहले सामान्य भाषा में, फिर असभ्य भाषा में, फिर व्यक्तिगत आक्षेप और फिर ये विरोध गाली-गलौच में तब्दील हो गया। अर्चना सभी कुछ मौन होकर देख रही थी। उनके विश्वस्त कर्मचारी उन्हें कुछ करने का आग्रह करते, लेकिन वे हँसकर टाल देती। जब पानी सर से गुजरने लगा तब फिर उन्होंने कहा कि अब तो आपको कुछ करना ही पड़ेगा। विरोधियों की हिम्मत बढ़ती ही जा रही है।

अर्चना ने कहा कि मैं स्त्री हूँ, मैंने गृहणी के रूप में गरल पीना सीखा है, नौकरी पेशा महिला के रूप में भी मैंने गरल पीया है और अब उच्च अधिकारी बनने के बाद भी गरल पीने का अभ्यास कर रही हूँ। क्योंकि अपने स्वार्थों में अंधे कुछ लोग समाज में केवल जहर ही बाँटते हैं। यदि मैं पीना बन्द कर दूंगी तो ये शेष समाज को जहरीला बना देंगे। अतः कुछ लोगों को उनका गरल पीना चाहिए।

17 लेखक

पूर्णाशंकर जी श्रेष्ठ साहित्यकार थे, कई पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं और कई पाण्डुलिपियां अभी जिल्द को तलाश रही थी। घर में सर्वत्र पुस्तकों एवं कागजों का साम्राज्य स्थापित था। अधिकारी पुत्र को इन सबसे लगाव नहीं था। प्रतिदिन की खट-पट से उक्ता कर एक दिन पूर्णाशंकर जी ने सारी पुस्तकें और पाण्डुलिपियां बेच दी। कमरा खाली हो चुका था, अब वह कक्ष एक अधिकारी-पुत्र का बैठक-खाना था। पूर्णाशंकर जी कुछ दिनों बाद ही स्वर्ग सिंघार गए।

शोक-सभा चल रही थी, तभी एक गाड़ी आकर रुकी, उसमें से एक प्रकाशक उतरा। प्रकाशक ने सर्वप्रथम पूर्णाशंकर जी को श्रद्धांजलि दी, फिर उनके बेटे की ओर उन्मुख हुआ। प्रकाशक ने कहा कि एक दिन पूर्णाशंकर जी अपनी समस्त दौलत मेरे पास छोड़ गए थे, उनकी इच्छा थी कि मैं अपनी जमा-पूँजी को नाम दूँ।

अधिकारी पुत्र असमंजस में था, दिल धड़क रहा था, कि पिताजी के पास कौन सी जमा-पूँजी थी?

तभी प्रकाशक ने कहा कि पूर्णाशंकर जी ने मुझसे आग्रह किया था कि मैं उनकी शेष पाण्डुलिपियों को प्रकाशित करूँ। मेरे लिए यह सौभाग्य की बात थी। लेकिन उन्होंने एक शर्त रख दी थी, जिसे पूरा करना कठिन था। आज उनकी मृत्यु के बाद मैं उनकी अंतिम इच्छा पूर्ण करना चाहता हूँ क्योंकि वे बहुत ही श्रेष्ठ साहित्यकार थे।

सारे ही लोग और अधिकारी पुत्र उनके चेहरे की ओर देख रहे थे। एक अनजाना डर पुत्र के चेहरे पर देखा जा सकता था। पता नहीं अंतिम इच्छा क्या हो? कहीं मुझे समाज के समक्ष स्वीकार करने पर मजबूर तो नहीं होना पड़ेगा? प्रकाशक ने कहा कि पूर्णाशंकर जी चाहते थे कि मेरी पुस्तकों पर लेखक की जगह मेरे पुत्र का नाम लिखा जाए। जिससे मेरे कक्ष में पुनः मेरी पुस्तकें सज सकें। अतः मैं आपसे आज्ञा प्राप्त करने आया हूँ।

18 पागल

एक डाक्टर के घर के बाहर बने पक्के चबूतरे पर एक पागल ने नियमित बैठक बना ली थी, वह सुबह सूरज उगने के साथ ही वहाँ आकर बैठता और सूरज डूबने के बाद ही वहाँ से जाता। डाक्टर और उसके परिवार को उससे खुंदक होती लेकिन वे सब उसको वहाँ से उठने के लिए कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। उस पागल को कोई चाय पिला देता, कोई खाना दे जाता। एक दिन डाक्टर की पत्नी ने देखा कि एक सज्जन काफी सारा भोजन लेकर आए और उस पागल को दे दिया। उन्होंने सोचा कि आज अच्छा मौका है और हो सकता है कि यह व्यक्ति इस पागल का कोई रिश्तेदार ही हो? वे आगे बढ़ी और प्रतिदिन होने वाली गंदगी और घर के बाहर एक पागल और गंदे व्यक्ति के बैठे रहने से होने वाली असुविधा के लिए उन्होंने उस व्यक्ति को आड़े हाथों लेना चाहा। जैसे ही वह बाहर आयी और उसने बोलने के लिए अपना मुँह खोलना चाहा, इससे पूर्व वे सज्जन बोल उठे।

वे सज्जन बोले कि आपसे एक निवेदन है कि आप इसे यहाँ बैठे रहने दें। डाक्टर पत्नी ने कहा कि क्यों? आप जब इसके रिश्तेदार हैं तो इसे अपने साथ क्यों नहीं ले जाते? खाना देकर किस पर अहसान कर रहे हैं?

वे बोले कि मैं इसका रिश्तेदार नहीं हूँ, बस इसे खाना देने आ जाता हूँ। इसे खाना देने वाले तो मेरे जैसे बहुत मिल जाएंगे लेकिन एक पागल को बैठने की जगह देने वाला आपके अतिरिक्त कोई नहीं मिलेगा।

19 प्रबुद्धता

सरिता मनोविज्ञान की प्राध्यापक थी। कॉलेज और घर की जिम्मेदारी के बाद भी उसे लगता था कि सामाजिक कार्य करना चाहिए। एक शीर्षस्थ सामाजिक कार्यकर्ता एक दिन उसके पास आए। वे बोले कि आपको हमारे साथ सामाजिक कार्य करना चाहिए।

सरिता तैयार हो गयी। अब वह ऐसे प्रकल्प पर कार्य कर रही थी जो मनोविज्ञान से जुड़ा था। कुछ वर्षों में ही उसकी ख्याती सम्पूर्ण देश में होने लगी। एक दिन अचानक ही वह प्रकल्प संस्था द्वारा रोक दिया गया। सरिता ने उनसे पूछा कि सर, यह प्रोजेक्ट किस कारण से रुक गया है?

उन्होंने कहा कि कुछ सरकारी व्यवधान है, कुछ दिनों में दूर हो जाएंगे, तब हम इसे पुनः चालू कर देंगे। तब तक आप कुछ और कार्य कर लें।

समय तेजी से निकल रहा था, और सरिता के पास उसके लायक कोई काम नहीं था। एक दिन सर का फोन आया, उन्होंने कहा कि आज शाम को चार मेहमान तुम्हारे घर खाना खाने आएंगे।

सरिता ने कहा कि सर आज मैं क्षमा चाहती हूँ, क्योंकि आज मेरे समधी आए हुए हैं और हम सब आज बाहर जाने वाले हैं।

अरे तो क्या, कल चले जाना। सर ने कहा।

नहीं सर वे कल तो वापस चले जाएंगे। उसने फिर माफ़ी मांगी।

कई दिन बाद उसने सर से बात की, वह बोली कि सर हमारे प्रोजेक्ट का क्या हुआ?

सर बोले कि जब आपको हम काम देते हैं, तब आप काम नहीं करती। फिर आप काम मांगती हैं।

लेकिन सर वह तो खाना खिलाने का काम था।

तो आपको और क्या काम दे सकते हैं? हम सब लोगों की सेवा करना ही तो आप जैसी महिलाओं का काम है। प्रबुद्धता की हमें आवश्यकता नहीं है। वह हमारे पास बहुत है।

20पहरे

आज मन कर रहा है कि कहीं दूर उड़ चलें। हम कल भोर होते ही एक लम्बी यात्रा पर निकल पड़ेंगे। कबूतर का जोड़ा रात को गुटरगूँ कर रहा था। कबूतरी कह रही थी कि पिछले साल साइबेरिया से जो हंसों का जोड़ा आया था, उसने कितनी बार हमें निमंत्रण दिया था। लेकिन तुमने उसके बारे में विचार ही नहीं किया।

कबूतर बोला कि हाँ, चलो अब उनका निमंत्रण कबूल कर ही लेते हैं। वे दोनों एक पुराने घर की छत पर अपना बसेरा किए हुए थे। वे अभी जाने की सोच ही रहे थे कि कबूतरी ने एक प्रश्न कर दिया और बोली कि देखो इस घर में जो दो बुजुर्ग रहते हैं, आज वे दुखी नजर आ रहे हैं। उनके दुख का कारण क्या है?

कबूतर बोला कि क्या बताऊँ, ये इंसानों के पहरे हैं। हंसों की ही तरह इनका पुत्र भी पिछले साल विदेश से आया था, इन्हें वहाँ का निमंत्रण देकर गया था। ये वहाँ जाना चाह रहे थे, लेकिन इन्हें वीजा नहीं मिला।

कबूतरी बोली कि यह वीजा क्या होता है? क्या हमें भी लेना पड़ेगा? नहीं ये सारे पहरे इंसानों ने ही बनाए हैं, इंसानों के लिए। हम तो मुक्त हैं और सारा आकाश और सारी पृथ्वी हमारी है।

21 वंशहीन

नीता की जिन्दगी में आज बहुत बड़ी खुशी का दिन है। अमेरिका में बसे बेटे के बेटा हुआ है, याने उसके पोता हुआ है। घर में बड़ी सी पार्टी दी है उसने। बधाइयों के संदेश आ रहे हैं।

कुछ दिन बाद जनगणना वाले आए, उसने हुलसकर अपने पोते का नाम भी लिखवाना चाहा। उन्होंने कहा कि जन्म प्रमाण-पत्र दिखाइए।

नीता ने कहा कि वह तो अमेरिका में पैदा हुआ है।

तब वह वहाँ का नागरिक है यहाँ का नहीं। और आपने यहाँ अपने बेटे का नाम भी कैसे लिखा रखा है?

वह उस दिन उन्हें वंशहीन कर के चला गया।

22 गन्दी मक्खी

मुझे शाम तक पहाड़ी पर बने मन्दिर तक पहुँचना था। अभी कदम बढ़े ही थे कि एक गंदगी में बैठने वाली बड़ी मक्खी, सिर के पास आकर भिन-भिनाने लगी। मेरा सारा प्रयास उसे अपने शरीर से दूर रखना था। क्योंकि वो अपने साथ नाना प्रकार के किटाणु लेकर आयी थी। मेरी चाल कभी धीमी हो जाती और कभी तेज। आखिरकार मैं अपने गंतव्य तक समय रहते पहुँच ही गयी। मन्दिर में एक मित्र ने पूछा कि रास्ते का आनन्द कितना आया?

मुझे तो एक मक्खी के कारण रास्ता दिखा ही नहीं, बस केवल मंजिल मेरे सामने थी और मैं यहाँ तक पहुँच ही गयी।

अर्थात् आपने रास्ते में कुछ नहीं देखा?
नहीं।

अच्छा हुआ, क्योंकि रास्ते में जगह-जगह कीचड़ भरे गड्ढे भी थे। इस गन्दी मक्खी के कारण आप का ध्यान उस ओर गया ही नहीं और आप उसकी बदबू से बच गयीं।

23 मित्र

श्रीधरणजी भारत सरकार की नौकरी के तीस वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। उनको इस कालावधि में 25 स्थानों पर स्थानान्तरित किया गया। उनका परिचय सभी उच्च अधिकारियों से रहा लेकिन उन्होंने स्वयं के लिए कभी प्रार्थना नहीं की। वे मन्दिर में भी जाते तो भगवान को प्रणाम करके ही आ जाते, वहाँ भी कुछ नहीं माँगते। वे फोरेस्ट विभाग में उच्च पद पर थे। अभी कुछ दिन पूर्व ही वे मेघालय आए हैं। बार-बार होने वाले स्थानान्तरण से बच्चों की पढ़ाई में भी कई बार व्यवधान आया है। पत्नी भी आस-पड़ोस बदलने से दुखी है। हर साल ही सामान खोलना और बाँधना क्रम सा बन गया है। एक बार पत्नी ने कहा भी कि आप मंत्री जी या किसी वरिष्ठ अधिकारी से बात क्यों नहीं करते? आपसे सभी के इतने अच्छे सम्बन्ध हैं।

वे बोले कि क्या होगा गिड़गिड़ाकर, अभी वो मेरी इज्जत करते हैं फिर मैं उनका चापलूस मात्र रह जाऊँगा।

तभी उनकी बीस वर्षीय पुत्री उछलती-कूदती घर में आयी। वह चहककर बोली कि पापा आज मुझे भारत सरकार की तरफ से 'सर्वोत्कृष्ट मित्रता पुरस्कार' मिला है। आपके कारण मेरे सम्पूर्ण भारत में ढेरों मित्र जो बन गए हैं।

हाँ बेटा, हमने जीवन भर मित्रों को मित्र ही बने रहने दिया है, उन्हें अपना भाग्य-विधाता कभी नहीं बनाया।

24 सामाजिक कार्य

रमेश बाबू एक सरकारी नौकर थे, साथ में उन्हें सामाजिक कार्य करने में भी आनन्द आता था। वे शाम को पाँच बजे ऑफिस से छूटकर सीधे ही सामाजिक कार्य करने के लिए संस्था के कार्यालय चले जाते थे। वहाँ वे रात आठ बजे तक कार्य करते रहते। कभी रविवार को भी काम करने चले जाते। उनकी पत्नी उन्हें हमेशा ही खरी-खोटी सुनाती।

‘इतना समय फोकट में बर्बाद करते हो, यदि इस समय कहीं और काम करते तो घर में चार पैसे और आते।’ पत्नी का यह ताना रोज का ही था।

एक दिन सुबह-सुबह ही पत्नी से झगड़ा हो गया और रमेश बाबू ने कहा कि अच्छा है आज के बाद मैं सामाजिक कार्य के लिए नहीं जाऊँगा। उस दिन पत्नी बहुत खुश थी। शाम को वह उनका पाँच बजे से ही इन्तजार कर रही थी लेकिन रात के दस बज गए और रमेश बाबू का कहीं पता नहीं।

पत्नी चिंता से ग्रस्त थी, संस्था के कार्यालय पर फोन किया लेकिन पता लगा कि वे तो आज आए ही नहीं। फिर कहाँ गए? फोन करते-करते ग्यारह बज गए। आखिर रमेश बाबू लड़खड़ाते हुए घर आए। उनके साथ एक आदमी भी था। आते ही वे पत्नी से बोले कि इसे पाँच हजार रुपये दे दो। मैं आज जुएं में हार आया हूँ। पत्नी ने ना-नुकर की तो वे सीधे ही जूता उतारकर उसे मारने दौड़े। आखिर पत्नी ने रुपये लाकर दे दिए।

पत्नी रसोई में उनका खाना बना रही थी और रोती जा रही थी। इससे तो कम से कम समाज का काम करते थे तभी अच्छे थे। ये सारी बुरी आदते तो नहीं थीं।

रमेश बाबू बाहर से ही हँसकर बोले कि अब समझ आया अच्छे काम और बुरे काम का अन्तर। लो अपने रुपये वापस और अल्मारी में रख दो। अब निर्णय करो कि मुझे क्या काम करना चाहिए? मुझे भोगवादी बनाना चाहिए या त्यागवादी?

25 विषवृक्ष

अशोक का घर झगड़े का अड्डा था। बात-बात में पिताजी गाली देते, मारपीट करते। माँ भी कम नहीं थी, वह भी बच्चों को पीटती। घर में रोज ही महाभारत मचा रहता। अशोक की भी हरकतें ठीक नहीं थीं। वह भी रोज ही धमकाकर पिताजी से पैसे ले जाता। माँ को गाली देता।

एक दिन उसके एक रिश्तेदार ने उससे कहा कि अशोक तुम्हारा व्यवहार देखकर तुम्हें कौन लड़की देगा?

अरे मैं शादी करना ही नहीं चाहता, इसीलिए यह सब करता हूँ। मैं नहीं चाहता कि इस विषवृक्ष में और फल लगें।

26 बौद्धिक प्रतिभा

मेरी पत्नी का जब भी मन करता है तब वह गहने और कपड़े खरीद लाती है। लाकर मुझे बिल पकड़ा देती है और मैं हँसते-हँसते उसके लाखों रूपयों के बिल चुका देता हूँ। एक दिन वह बोली कि मुझे कम्प्यूटर चाहिए। मैंने कहा कि मुझसे तो तुमने लाखों रूपयों के लिए नहीं पूछा तो फिर आज 20-30 हजार के लिए क्यों पूछ रही हो? गहने और कपड़े खरीदना स्त्री-सुलभ रुचियों का परिचायक है लेकिन कम्प्यूटर खरीदना मेरी बौद्धिक प्रतिभा का। तुम्हें यह विलासिता लगेगी अतः तुमसे खरीदने का आग्रह कर रही हूँ।

27 किसका नरक बड़ा?

मोहन काका कच्ची बस्ती में घूम रहे हैं। वे एक घर के बाहर कुछ देर बैठ जाते हैं। घर के बाहर गन्दी नाली बह रही है, उसमें सूअर लौट रहे हैं। पास ही दो कुत्ते लड़ रहे हैं। अन्दर से औरतों के झगड़ने की आवाजें आ रही हैं। एक बूढ़ा व्यक्ति खाट पर लेटा है, वह चिल्ला रहा है 'अरे मुझे भी तो रोटी दे दो, सुबह से शाम हो गयी, अभी तक पेट में दाना भी नहीं गया है। तभी सुरेश सायकिल चलाता हुआ मोहन काका के पास चला आता है। उन्हें देखते ही बोलता है कि 'काका आप यहाँ क्या कर रहे हैं? गन्दी बस्ती में घूम रहे हैं। क्या आप पागल हो गए हैं?' नहीं रे वापस अपनी कोठी जाने पर मुझे वहाँ का नरक भी अच्छा लगने लगे इसीलिए ही घूम रहा हूँ।

28 धरती

एक दिन बीज और धरती में ठन गयी। बीज बोला कि 'अरे धरती तेरा अस्तित्व मेरे बिना कुछ भी नहीं है। मेरे कारण ही तू अंकुरित होती है, लहलहाती है। यदि मैं तुम में समाहित नहीं होऊँ तो तुम बंजर कहलाने लगोगी।' धरती ने कहा कि बीज तेरा कथन सत्य है। लेकिन तू यदि मुझमें समाहित नहीं होगा तब पड़ा-पड़ा सड़-गल जाएगा। मुझ में समाहित होने पर ही तेरी प्रतिकृति बनेगी और मैं ही इसे कई गुणा करके दुनिया को प्रदान करूँगी।

29 कैदी

अपराध, अपराध बस अपराध। जेल की चार-दीवारियों के बीच बस एक यही नाम पसरा रहता है। गाहे-बगाहे स्वयंसेवी संस्था वाले वहाँ आते हैं और कोई न कोई कार्यक्रम वहाँ करते हैं। एक दिन हम भी गायत्री परिवार को लेकर वहाँ गए और कैदियों के मध्य हवन कराया। हवन की समाप्ति के बाद हवनकर्ता ने आह्वान किया कि सभी आगे आएँ और कोई न कोई एक बुराई का परित्याग करें। एक के बाद एक कई कैदी खड़े हो गए और बोले कि अब अपराध नहीं करेंगे।

एक कैदी मेरे पास आया। मैंने उससे कहा कि हाँ बोलो, तुम भी प्रतिज्ञा लो। वह बोला कि क्या प्रतिज्ञा लूँ? मैंने कोई अपराध नहीं किया। मुझे यह भी विदित नहीं कि मुझे किस अपराध के लिए यहाँ कई वर्षों से कैद कर के रखा है। मैं यह प्रतिज्ञा लेता हूँ कि अब से मैं अपनी गलतियों को जानकार रहूँगा।

30 पुण्य

मंत्रीजी दिनभर की व्यस्तता के बाद रात 10 बजे अपने कक्ष में बैठे हैं। अपने निजि सहायक से दिनभर का हिसाब माँग रहे हैं। निजि सहायक बताता है कि 'सर आज पाँच मास्टर्स के स्थानान्तरण कराए, जिनसे 10 हजार रुपए के हिसाब से प्राप्त हुए। मेडीकल कॉलेज के प्रोफेसर का व एक एक्स.ई.एन. का स्थानान्तरण पर चार लाख रुपए आए। तीन बाबू थे, पाँच दूसरे अधिकारी, कुछ नर्सिंग स्टाफ भी था। कुल मिलाकर आज 10 लाख रुपए प्राप्त हुए।

पार्टी फण्ड में कितना भेजा?

सर पूरे पाँच लाख रुपए भेज दिए हैं। लेकिन सर एक बात कहना चाहता हूँ, मुझे क्षमा करना। यदि आप महिने में एक बार लाख दो लाख रुपया किसी अनाथालय व मंदिर आदि में भी दान दे दें तो कुछ पुण्य मिल जाएगा।

अरे हम सारा दिन पुण्य ही तो करते हैं। आज जिनके भी स्थानान्तरण कि सिफारिश की है, वे सब लाखों रुपया कमा रहे हैं, तभी तो पैसा दे रहे हैं। मैं उनके काम आता हूँ तभी ये देते हैं। किसी के काम आना पुण्य नहीं तो और क्या है?

31 पूजनीय

प्रसिद्ध साहित्यकार रामवल्लभजी का आज उद्बोधन है। मंच पर एक राजनेता, एक पूँजीपति भी बैठे हैं। रामवल्लभजी अपने उद्बोधन से पूर्व मंच को सम्बोधित करते हुए बोल रहे हैं कि पूजनीय नेता जी, पूजनीय सेठजी.....। लोग आश्चर्य में पड़ गए। रामवल्लभजी एक राजनेता और काली कमाई से बने सेठ को पूजनीय सम्बोधित कर रहे हैं! कार्यक्रम समाप्त हुआ, उनके शिष्य ने प्रश्न किया कि आप का सम्बोधन कितना उचित था? क्या आप भी राजनेता और पूँजीपतियों को पूजनीय मानते हैं?

रामवल्लभ जी ने कहा 'हाँ, क्योंकि भारत में हम साँपों की भी पूजा करते हैं।' मैं उनके लिए और क्या सम्बोधन करता?

32 घर

कमला ने आज अपनी सहेलियों को चाय पर आमंत्रित किया है। दिन में उसकी सभी अभिन्न सहेलियां समय पर ही उसके घर आयी थीं लेकिन कमला का बैठक-खाना तितर-बितर देखकर उन्हें अजीब सा लगा।

अरे कमला ने अपना घर कैसा फैला रखा है? दोनों ही अकेले रहते हैं फिर भी इतना फैलावड़ा? सुमित्रा ने ताना कसा।

हो सकता है कि आज नौकरानी नहीं आयी हो, कुमुद बोली।

अरे क्या हुआ तो? जब हमें बुलाया है तो सफाई भी करनी ही चाहिए थी।

इतने में ही कमला इठलाती हुई, खुश-खुश बैठक-खाने में प्रवेश करती है।

सभी उसे प्रश्नभरी निगाहों से देखती हैं।

देखो न बच्चों ने कैसा घर फैला दिया है, आज बहुत दिनों बाद इस घर में बच्चों ने उधम मचाया है। कितना अच्छा लग रहा है न यह घर। नहीं तो यह एक मकान ही बना हुआ था, एक होटल जैसा, सब कुछ सजा हुआ। कमला चहकती हुई बोले जा रही थी।

33 भीख

बाबूजी तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है, ऊपर से यह दूध पीता बच्चा। छाती सूख गयी है, अब इसे कहाँ से दूध पिलाऊँ? कुछ मदद कीजिए बाबूजी।

बच्चे का बाप कहाँ है? बाबू जी का प्रश्न था।

अरे साहब वो नासपीटा तो मुझे कब का छोड़ चुका।

काम क्यों नहीं करती? फिर एक और प्रश्न।

कहाँ काम करूँ? काम करने जाने पर इस जैसे एक-दो और पेट में आ जाएँगे।

इससे तो भीख ही भली है।

ले दस रूपए रोटी खा ले।

दस रूपए पल्लू से बांधकर वह फिर दूसरे ग्राहक को पकड़ने आगे बढ़ जाती है। फिर वही प्रश्न और वही उत्तर।

ले अपना बच्चा सम्भाल और यह ले पूरे पचास रूपए। दो घण्टे से गोद में उठाए-उठाए हाथ ही दुख गए। इन दो घण्टों में कमाए सौ रूपयों में से गिनकर पूरे 50 रूपए वह बच्चे के एजेण्ट को दे देती है।

34 सब कुछ तो है

प्रिया एक पत्रिका की सम्पादक थी, एक जनजातीय गाँव पर फीचर लिखना था। अपने कुछ साथियों के साथ कार में वहाँ के लिए रवाना हुई। गर्मी बहुत थी, ए.सी. गाड़ी भी ठण्डक नहीं दे रही थी। जैसे-तैसे करके वे अपनी मंजिल तक पहुंच ही गए। कार एक सड़क किनारे रुक गयी, वहाँ से दो कि.मी. कच्चे रास्ते पर पैदल चलना था। प्रिया ने कहा कि यदि मुझे पता होता तो मैं कभी नहीं आती। मेरे पति मुझ पर चिल्लाएंगे कि सारी सुख-सुविधा छोड़कर एक फीचर लिखने के लिए इतनी परेशानी लेने की क्या जरूरत थी? लेकिन अब पीछे नहीं मुड़ा जा सकता था। भरी गर्मी में आखिर पैदल चलकर एक छोटे से गाँव में वह पहुंच ही गयी।

एक टूटी सी खाट पर एक बुजुर्ग बैठे थे, पास में दो-तीन नंग-धड़ग बच्चे खेल रहे थे। प्रिया के दल का भोजन भी उन्हीं बुजुर्ग के घर था। एक छोटी सी झोपड़ी में परिवार के सभी सदस्य रहते थे। मुश्किल से रोटी का जुगाड़ हो पाता था। शायद आज हमारे खाना खाने के बाद उस परिवार को कुछ कम भोजन मिले? ऐसी स्थिति में प्रिया को लगा कि हमें इनके लिए कुछ करना चाहिए। उसने उस बुजुर्ग से पूछा कि 'बाबा आपको यहाँ क्या चाहिए'?

प्रिया की बात सुनकर बुजुर्ग ने चारों तरफ देखा, फिर बोले कि यहाँ सभी कुछ तो है।

35 अच्छाई

शेखर एक दिन अपने दोस्तों से कह रहा था कि मेरी माँ ने मेरे लिए बहुत कुछ किया है। जब मेरे पिताजी मुझे सहारा नहीं देते थे तब वह मेरा सहारा बनती थी। जब मुझे पैसे की जरूरत होती थी तब वही मेरा बैंक थी और जब मैं पहली बार प्यार की गिरफ्त में आया था तब वही मुझे इस भँवरजाल से बाहर निकाल कर लायी थी।

निर्मल ने कहा कि मैं समझता हूँ कि ऐसा प्रत्येक माँ करती है। फिर भी मैं तुम्हारी माँ से मिलना चाहूँगा।

निर्मल, शेखर की माँ से मिला। उसने कहा कि शेखर आपकी बहुत तारीफ करता है।

माँ ने कहा कि माँ तो अपने बच्चों के लिए हमेशा से ही करती आयी है। बेटे हमेशा से ही माँ का गुणगान करते आए हैं। लेकिन काश मैं भी और मेरी जैसी सभी माँएँ भी ऐसा कह पाती कि बेटे, बुढ़ापे में हमारा सहारा बने हुए हैं?

36 तर्पण

एक वृद्ध तपस्वी गंगा के किनारे बैठकर तर्पण कर रहा था। वह जोर-जोर से उच्चारित कर रहा था कि हे सत्य! इस कलिकाल में, मैं देख रहा हूँ कि चारों तरफ झूठ का साम्राज्य विस्तार लेता जा रहा है अतः न मैं और न तुम, एक दूसरे के सहारे जीवित रह सकते हैं, अतः मैं तुम्हारा गंगा में तर्पण करता हूँ। फिर उन्होंने कहा कि हे धैर्य! इस चंचल गतिमान संसार में अब धैर्य के लिए किसी के पास समय नहीं है, अतः तुम्हारा भी तर्पण।

फिर कहा कि हे शान्ति! मैं आज तुम्हारा भी तर्पण करता हूँ क्योंकि अब जीवन सतत संघर्ष का दूसरा नाम बन गया है अतः शान्ति का अर्थ परम शान्ति ही शेष रह गया है।

नदी के दूसरे किनारे एक युवा आधुनिक संन्यासी स्नान कर रहा था। उसने देखा कि कुछ गंगा में प्रवाहित होकर आ रहा है। उन अनजानी वस्तुओं को संग्रह की दृष्टि से प्राप्त करने हेतु वह तत्काल नदी में कूद गया और सभी को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। फिर उसने पूछा कि तुम कौन हो?

हम सत्य, धैर्य और शान्ति हैं। अभी तक हम एक वृद्ध संन्यासी के साथ रहते थे। लेकिन आज उन्होंने हमसे पीछा छुड़ा लिया है। क्या तुम हमें अपने मन में स्थान दोगे?

लेकिन मेरे पास असत्य, अधैर्य और संघर्ष हैं, उनके रहते तुम कैसे स्थान पा सकते हो?

वे बोले कि हमने संन्यासी को कहा था कि संन्यासी का कार्य संसार में हमें वितरित करना है अतः तुम हमें अपनी पूंजी मत समझो। हम तुम्हारी पूंजी तभी तक है तब तक संसार इसका मूल्य समझती है। आज संसार हमसे अनजान बन चुका है अतः हमारा मूल्य भी समाप्त हो गया है। पुरानी पीढ़ी तो अपनी मर्जी से नवीन पीढ़ी को कुछ नहीं दे पायी, लेकिन क्या तुम हमें धारण करने का साहस रखते हो?

नयी पीढ़ी का संन्यासी चेलेंज को अस्वीकार नहीं कर पाया और सत्य, धैर्य और शान्ति नयी पीढ़ी के संन्यासी के साथ वापस आ गयी। वे बार-बार उसे समाज

के सम्मुख ले जाने की बात करते लेकिन आधुनिक संन्यासी जब भी उन्हें समाज के सम्मुख ले जाने का प्रयास करता, समाज उसे अविश्वास की दृष्टि से देखता। एक दिन उसने तंग आकर एक बच्चे को इन तीनों को सौंप दिया। तभी से ये तीनों बच्चों के पास ही रह रहे हैं, बस इस इंतजार में की कब कोई संन्यासी आएगा और इन्हें अपने साथ ले जाएगा।

37 सिफारिश

वीणा को एक नौकरी के साक्षात्कार का निमन्त्रण मिला। उसके पास कोई सिफारिश नहीं थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या बिना सिफारिश के साक्षात्कार के लिए जाना उचित होगा? लेकिन उसके पिता ने कहा कि मेरे एक मित्र हैं, उनकी बात कोई नहीं टालता अतः मैं उनसे कह देता हूँ। वीणा के पिताजी ने श्री शर्माजी को बेटी के साक्षात्कार के लिए कहा। उन्होंने कहा कि आपकी बेटी जैसी मेरी बेटी अतः मैं अवश्य इसके लिए कह दूंगा, आप इसके सारे कागजात मुझे दे दीजिएगा। अब वीणा और उसके पिताजी दोनों ही निश्चित थे। साक्षात्कार हो गया, साक्षात्कार के बाद श्री शर्मा जी का परम शिष्य मिल गया। वीणा ने पूछा कि तुम कैसे?

मैं भी साक्षात्कार देने आया हूँ। उसने कहा।

लेकिन तुम तो अभी साक्षात्कार के योग्य नहीं हुए हो। तुम्हारा तो अभी अध्ययन ही चल रहा है।

वह बोला कि अरे गुरुजी हैं न।

वीणा ने फिर मन ही मन कहा कि मेरा क्या होगा?

वह फिर बोला कि गुरुजी बता रहे थे कि तुम्हारे पास एक सर्टिफिकेट ही नहीं है। अतः उन्होंने साक्षात्कार लेने वालों से बोला कि इसके पास यह सर्टिफिकेट नहीं है अतः इसके स्थान पर अन्य व्यक्ति का चयन कर लिया जाए और मेरा चयन गुरुजी की कृपा से हो गया।

38 प्रगतिशील

एक साहित्यिक सभा चल रही थी, एक वरिष्ठ साहित्यकार बोल रहे थे और जमकर भारतीय विवाह पद्धति और जातीय प्रथा कि आलोचना कर रहे थे। वे बोल रहे थे कि हम सब इंसान हैं, हम सभी को अपना जीवन जीने का अधिकार है। प्रत्येक युवा को स्वैच्छा से विवाह का अधिकार होना चाहिए और जब हम एक हैं तो फिर जाति प्रथा क्यों? उनकी प्रगतिशीलता पर सभी खुश थे। लोग कह रहे थे कि यदि वरिष्ठ लोग ऐसे ही मार्गदर्शन करते रहें तो फिर एक दिन हम भेदभाव रहित समाज की स्थापना कर लेंगे।

सभा समाप्त होने के बाद साहित्यकार घर पहुंचे। वहाँ उनकी पुत्री एक दलित युवक के साथ बैठी थी। पुत्री ने परिचय कराया कि पिताजी यह मेरे मित्र हैं और आज आपसे मिलने आए हैं।

साहित्यकार ने पूछा कि कहिए, कैसे आना हुआ।

युवक बोला कि मैं आपके विचारों से बहुत प्रभावित हूँ और इसी कारण आज यहाँ आने की हिम्मत जुटा पाया हूँ। मैं आपकी पुत्री से विवाह करना चाहता हूँ। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ, यह बात मेरी पुत्री को भी नहीं मालूम। मैंने आज से दस वर्ष पहले ही इसका विवाह मेरे मित्र के पुत्र से निश्चित कर दिया था, साहित्यकार ने उस युवक से कहा।

39 स्मृतिदंश

आज आपकी बहुत याद आ रही है। जब भी मैं इंसान प्रदत्त परेशानियों से घिर जाती हूँ तब अक्सर आपकी याद आती है। उस समय आपके स्मरण से मुझे हौसला मिलता है, परेशानियों से जूझने की ताकत मिलती है। मैं तौलने लगती हूँ, एक ही तराजू में आपको और अन्य इंसानों को। मुझे तब बहुत राहत मिलती है जब उन सबका देय आप द्वारा दिए गए दंशों से बहुत कम निकलता है। अरे मैं तो आपके दंश के दौर से गुजर चुकी हूँ, फिर इन छोटी-मोटी परेशानियों से कैसा डर? सच आपके देय के समक्ष उनका देय कितना बौना हो जाता है?

40 पूजा और कर्म

प्रत्येक कठिन समय में भगवान तुम मेरे साथ रहते हो, जब-जब भी मनुष्य ने मुझे दुकाराया तब-तब तुमने मुझे सहारा दिया, एक मुकाम दिया। लेकिन फिर भी मैं तुम्हारी पूजा नहीं करती। यदि कोई दूसरा होता तो वह तुम्हारा मन्दिर बनवाता और रोज तुम्हें पूजता। लेकिन मैं तुम्हारी नित्य-प्रति पूजा तो दूर कभी वार-त्यौहार स्मरण भी नहीं करती। क्या प्रभु तुम्हें इस बात पर गुस्सा नहीं आता? क्या मुझे सजा देने का मन नहीं होता? नहीं, पूजा में चापलूसी का भाव दृष्टिगत होता है। चापलूसी और कर्म दोनों साथ-साथ नहीं रहते। मेरी पूजा तो श्रेष्ठ कर्म ही हैं, भगवान ने कहा।

41 सम्पदा

मैंने रात-दिन एक करके तुम्हें प्राप्त किया है। जब दुनिया रात्रि में विश्राम करती थी तब मैंने तुम्हें संचय करने का प्रयास किया। कभी-कभी ब्रह्म-मुहुर्त में भी मैंने तुम्हें पाने के लिए साधना की है। आज मेरे पास अकूत सम्पदा है। इसका मौल मेरे जीवन में अमूल्य है। न जाने कितनी पीढ़ियाँ इससे लाभान्वित होंगी। लेकिन कभी-कभी मुझे लगने लगता है कि शायद मेरी आगामी पीढ़ी को मेरी इस सम्पदा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उन्होंने कभी इसे देखने का भी प्रयत्न नहीं किया। लेकिन मुझे विदित है कि मेरे नहीं रहने के बाद मेरी यह धरोहर इनकी ही सम्पत्ति बनेगी और इनके काम आएगी। इसलिए मैंने इन्हें बहुत ही जतन से जिल्द बन्द कर एक अल्मारी में सजा दिया है। मेरे सारे ही हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को भी कम्प्यूटराइज्ड करा दिया है जिससे किसी को भी पढ़ने में कठिनाई नहीं आए। क्योंकि मैं जानती हूँ कि एक दिन इन शब्दों की उन्हें आवश्यकता पड़ेगी।

42 पैसे का मामला

विश्वविद्यालय में मीटिंग चल रही थी, प्रोफेसर वर्मा ने कहा कि सर हम सबके होटल चार्ज बहुत कम हैं। भला आज के युग में 500 रुपए में कहाँ अच्छे होटल मिलते हैं? सभी ने इस प्रस्ताव पर सहमति प्रकट की और सर्वसम्मति से यह पारित किया गया कि भविष्य में होटल प्रभार 500 के स्थान पर 1000 रुपया होगा।

मि. माथुर ने माँग की कि सर मीटिंग में आने का मानदेय भी 500 रुपया ही है। हम पूरा दिन अपने काम को छोड़कर आते हैं अतः यह भी राशि 1000 रुपए होनी चाहिए। सर्वसम्मति से इसे भी पारित कर दिया गया।

कुलपति ने आखिर प्रश्न किया कि और कोई मसला है?

हाँ सर, हमारे यहाँ दो चतुर्थ-श्रेणी कर्मचारी हैं, जिन्हें पाँच वर्ष से इन्क्रीमेंट नहीं लग रहा। शर्मा जी बोले।

क्यों नहीं लग रहा? कुलपति ने प्रश्न किया।

सर, पूर्व अधिकारी का इन दोनों से व्यक्तिगत द्वेष था, अतः उन्होंने इन्क्रीमेंट रोक दिया था। लेकिन सर, हम किसी का भी इन्क्रीमेंट कैसे रोक सकते हैं? वैसे भी बेचारे गरीब आदमी हैं, वेतन ही कितना मिलता है?

एक जाँच कमेटी बिठा दीजिए, रिपोर्ट आने पर निर्णय करेंगे। आखिर पैसे का मामला है, ऐसे ही तो लुटा नहीं सकते। कुलपति ने कहा।

43 तपन

आज बड़े ठण्डे-ठण्डे दिख रहे हो, स्वभाव की तेजी कहाँ गयी? रोज तो आग उगलते रहते थे, फिर आज यह ठण्डक?

क्या करूँ सुबह-सुबह ही समीर ने मुझे झकझोर दिया। कहने लगा, स्वभाव की इतनी गर्मी अच्छी नहीं। गर्मी के कारण स्वयं भी तमतमाए से रहते हो और दूसरों को भी जलाते हो। देखो तुम्हारा कण्ठ भी कितना सूख जाता है, सारा दिन पानी माँगते हो। पानी की कितनी किल्लत है तुम क्या जानो?

मुझे उसकी बात लग गयी। मैंने सलिल को पुकारा और कहा कि मेरे कारण तुम्हें सागर से ढेर सारा पानी मिला था, अब ऐसा करो कि तुम मेरे तन को थोड़ा ठण्डा कर दो।

उसने मुझे एक बादल का टुकड़ा ही दे दिया। इसी कारण मैं आज बादलों का एक बर्फीला टुकड़ा ओढ़कर निकला हूँ। कुछ दिनों तक ऐसी ही ठण्डक मेरी किरणों से बरसेगी। सूर्य मुस्कराकर बादल को ओढ़े ठुमक-ठुमक कर पृथ्वी को नापने लगा।

44 चोर

मजिस्ट्रेट कीर्तिवर्धन जी सर झुकाए अपने ड्राइंग-रूम में बैठे हैं। सामने समाचार-पत्रों की सुर्खियाँ उन्हें सर नहीं उठाने दे रही हैं — ‘मजिस्ट्रेट कीर्तिवर्धन ने रिश्वत लेकर एक चोर को छोड़ दिया’, ‘मजिस्ट्रेट कीर्तिवर्धन का कैसा इंसाफ’?, ‘चोर उनका रिश्तेदार तो नहीं’ ऐसे ही अनेक शीर्षकों से समाचार-पत्र रंगे पड़े हैं। उनकी पत्नी चाय का प्याला लेकर आयीं और बोली कि आपने यह क्या किया? बरसों की तपस्या को आखिर आपने क्यों भंग कर दिया? आप और रिश्वत यह बात तो गले ही नहीं उतरती! ये समाचार-पत्र वाले अपकी इज्जत मिट्टी में मिला देंगे। आपकी नौकरी भी खतरे में पड़ सकती है। आखिर आपने उस चोर को क्यों छोड़ दिया?

क्या करता? उसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे और कमाई का कोई साधन नहीं था। यह उसका पहला अपराध था। यदि मैं उसे सजा दे देता और उसे जेल भेज देता तो या तो बच्चे भी चोर बन जाते या फिर भिखारी। आज से वह हमारे यहाँ काम पर आएगा। मैंने अपने फ़ैसले में लिखा है कि यह उसका पहला अपराध है इसलिए इसे क्षमा किया जाता है यदि इसने दोबारा ऐसा अपराध किया तब इसकी सजा दोगुनी होगी।

45 गुलाब

एक लाल गुलाब बगीचे में अपनी डाली पर झूम रहा है। भोर की शबनमी बूँदे उसकी पत्तियों पर अठखेलियाँ कर रही हैं। वह अपने आप में मगन है, तभी उसकी तरफ दो हाथ बढ़ते हुए दिखाई देते हैं। वह सिमटना चाहता है लेकिन टहनी से बँधा उसका अस्तित्व उसे न तो सिमटने देता है और न ही भागने। हाथों की अँगुलियाँ अब और नजदीक आ पहुँची हैं। उसे छूने का प्रयास कर रही हैं। गुलाब सहमा सा आदमी की आँखों में झाँकता है, वहाँ एक लालसा दिखायी देती है, गुलाब को तोड़ने की, उसे अपने कोट में टाँकने की। अब उसे अपनी कोमलता खलती है, अपना सुन्दर स्वरूप खलने लगता है। कैसे बचाव करे वह स्वयं का? तभी उसके तन से आत्मविश्वास फूट पड़ता है और नुकीले काँटे उन तोड़ने वाली अँगुलियों में धँस जाते हैं। उफ, बोलता हुआ हाथ झटके से दूर चला जाता है।

46 शब्दों की उर्जा

एक व्यक्ति दुखी मन से भगवान से कह रहा था कि — हे भगवान मैंने तुम्हारी कितनी पूजा की, लेकिन तुमने मुझे इच्छित फल नहीं दिया। मैं आज भी उतना ही गरीब हूँ जितना दस वर्ष पूर्व था।
तभी आकाशवाणी हुई — तुम क्या करते हो?
प्रभु, आप तो सब जानते हैं, मैं एक शिक्षक हूँ। अभी तक न तो मुझे पदोन्नति मिली और न ही ट्यूशन के लिए मेरे पास बच्चे आते हैं।
अच्छा बताओ कि वर्षा से पूर्व वातावरण में क्या परिवर्तन होता है?
तीव्र गर्मी पड़ती है। भक्त का उत्तर था।
तुम शिक्षक हो, तुम्हारे पास शब्दों की उर्जा है। जिस दिन तुम्हारे शब्दों से उर्जा का निर्माण होगा, तभी तुमको भी वर्षा के निर्मल जल सा फल अवश्य प्राप्त होगा। मेरी पूजा करने से तो केवल मैं ही आ सकता हूँ।

47 शिक्षा की पहल

एक गरीब किसान था। दो बीघा जमीन से अपनी पत्नी और एकमात्र बेटे का पेट पालता था। उसका सारा जीवन मिट्टी और गारे को साँधते हुए ही निकला था। वह नहीं चाहता था कि उसका बेटा भी सर्दी, गर्मी और बरसात में खेत में जुते। उसने निश्चय किया कि मैं बेटे को पढ़ाऊँगा। जितनी उसकी सामर्थ्य थी तदनु रूप उसने उसे शिक्षित किया। एक दिन बेटा एम.ए. पास होकर शिक्षक नियुक्त हो गया।

कुछ दिनों बाद पिता ने बेटे से कहा कि 'बेटा अब तुम शहर में रहने लगे हो, कभी-कभार गाँव भी आना होगा। तुम्हारा अभी विवाह भी करना है, तब घर में बहु आएगी। गाँव की झोपड़ी में बहु को कठिनाई होगी। मैंने कुछ पैसा जोड़ रखा है, कुछ तुम दे दो, हम एक पक्का मकान बना लेते हैं।'

बेटा बोला कि मैंने पढ़ाई अपनी मेहनत से की है। आपने मुझ पर अधिक पैसे खर्च नहीं किए हैं। देखा जाए तो आपने मेरे लिए किया ही क्या है? मैं इंजीनियर बनना चाहता था, आपने मुझे पैसा नहीं दिया और मैं मजबूरी से शिक्षक बना। अब मुझे शहर में ही रहना है तो मैं अपना मकान शहर में ही बनाऊँगा। मेरे पास गाँव के मकान के लिए पैसे नहीं हैं।

पिता ने कहा कि बेटा तुम ठीक कहते हो। मैंने तुम्हें इंजीनियर बनाने में सहयोग नहीं किया, क्योंकि प्राइवेट कॉलेज में भर्ती कराने जितना पैसा मेरे पास नहीं था। लेकिन मैं एक किसान हूँ, मैंने अपने बेटे को किसान नहीं बनाकर उसे पढ़ाने भेजा यह कदम क्या उचित नहीं था? यदि मैं तुम्हें पढ़ाने ही नहीं भेजता तो तुम भी आज मेरा हाथ बँटा रहे होते। किसान अपने गाँव लौट गया।

48 पाँच दीपक

सविता गाँव में नई शिक्षिका बनकर गयी थी। आज गाँव में उसकी पहली दीवाली थी। जब वह शहर में थी तब वह ढेर सारे दीपक लगाती थी। उसका मन करता था कि दीवाली के दिन उसका घर ढेर सारे दीपकों की रोशनी से जगमग कर उठे। जैसे ही रात्रि ने दस्तक दी, दीपक लगाने का कार्य उसने प्रारम्भ कर दिया। उसने ढेर सारे दीपक थाली में सजाए और घर के बाहर आ गयी। एक थाली उसके हाथ में थी और एक थाली उसकी ग्यारह वर्षीय बेटी के हाथ में। बाहर निकलते ही उसकी निगाहें दूसरे घरों पर पड़ी। उसने देखा कि सभी घरों के बाहर पाँच-पाँच दीपक सजे हैं।

उसने अपने घर के आँगन में भी पाँच दीपक रखे और बेटी से कहा कि चलो मेरे साथ।

माँ, हम केवल पाँच दीपक ही लगाएँगे? शेष का क्या करेंगे?

सविता ने अपनी बेटी का हाथ थामा और चल दी दूसरे घरों में एक-एक दीपक रखने।

49 एलबम

चन्द्रमुखी का नाम साहित्य जगत में शीर्ष पर था। प्रतिदिन ही समारोहों में मुख्य-अतिथि या अध्यक्ष होती और उनके समाचार अखबारों की सुर्खियां बनते। लेकिन काल ने किसको अधिक समय दिया है?

उनके जाने के बाद उनके घर को बेच दिया गया है। कीमती सामान समेटा जा रहा है और फालतू सामान रद्दी की टोकरी में जा रहा है।

माँ ने भी कितनी रद्दी इकट्ठी कर ली है। झुंझलाकर विनोद बोल रहा था। यह देखो कितनी फाइलें तो अखबार की कतरनों की ही हैं। कितनी फाइलों में उनकी प्रकाशित रचनाएं हैं और कितनी ही फाइलों में वे पत्रिकाएं हैं जिनमें उनकी रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

अब ये सब हमारे किस काम की? ममता भी अपने पति की हाँ में हाँ मिला रही थी। पूरी अलमारी ही इससे भरी है। फिर किताबें भी तो कितनी हैं? मैं कहती हूँ कि इन सबको किसी लाइब्रेरी में ही दे देते हैं।

अरे छोड़ो अब कहाँ लाइब्रेरी ढूँढने जाएँगे? रद्दी वाले को ही दे दो।

और इन एलबमों का क्या करें? ये तो रद्दी वाले के भी काम के नहीं हैं।

नहीं मेमसाहब ये सब मुझे दे दीजिए। मेरे पास एक बड़ा हॉल है उसमें इन सबको सजा दूँगा। मेरी दुकान भी इनके नाम से चल निकलेगी। इतने बड़े व्यक्तियों की फोटो बड़े सौभाग्य से ही मिलती हैं।

50 प्रेम और दण्ड

प्रभु! मैं क्या करूँ? तुम कहते हो कि सभी से प्रेम करो। मैंने किया। मैंने पुत्र को बहुत लाड़-दुलार से पाला, वह छोड़कर चला गया। मैंने बहु का स्वागत बहुत प्रेम से किया, वह तिरस्कृत करके चले गयी। बेटियाँ तो खैर होती ही परायी हैं। मैंने आस-पड़ौस में प्रेम देना चाहा, उन्होंने दरवाजे बन्द कर लिए। मैंने मित्रों में प्रेम बाँटना चाहा, उन्होंने भी मुँह फेर लिया। मैंने अपने कर्मचारियों को भी प्रेम दिया, उन्होंने भी प्रतिघात किया।

इसलिए मैं केवल प्रेम ही नहीं करता, साथ में दण्ड भी देता हूँ। तभी तो मेरे मन्दिरों में चढ़ावे और पुजापे की भरमार रहती है। प्रभु बोले।

51 शाकाहारी हाथी

एक हाथी अपनी ही मस्ती में मगन चले जा रहा था। उसकी सूंड में गन्ना था, उसे वह मनोयोग से खा रहा था। उसके पीछे तीन-चार कुत्तों का दल चल रहा था। वे सब उसके पीछे-पीछे चलते हुए भौंक रहे थे। एक चिड़िया हाथी के कान के पास जाकर बैठ गयी।

चिड़िया ने हाथी से कहा कि ये कुत्ते क्यों भौंक रहे हैं?

हाथी बोला कि वैसे ही अपने आप में प्रसन्न हो रहे हैं कि हम हाथी जैसे विशाल जीव पर भी भौंक सकते हैं। ये सब जानते हैं कि मैं शाकाहारी हूँ।

52 रोटी और कुत्ते

झबरा कुत्ता आराम से सो रहा था। तभी कालू कुत्ता उसके पास आया और बोला कि अरे झबरे तू बड़े आराम से सो रहा है, अभी मालिक देखेंगे तो तुझे रोटी भी नहीं देंगे और दो लात भी लगाएँगे।

मैं अब उनकी रोटी पर नहीं पलता। मुझे उनकी चिन्ता भी नहीं। मुझे लात मारकर तो देखें, मैं उनकी टंगड़ी को ही चबा डालूँगा।

अरे भाई ऐसा क्या हो गया? मालिक तो बड़े भले हैं!

अरे कुछ नहीं, शहर में बहुत लोग हमें मुफ्त में ही रोटियां डालते हैं तो फिर हम काम क्यों करें?

53 दुश्मन

यार सुधांशु! तुम इतने कठोर क्यों हो? अपने किसी भी कर्मचारी की पदोन्नति नहीं करते। पदोन्नति तो उनका अधिकार है। तुम्हारे कार्यालय में बेचारे तीन कर्मचारी दस वर्ष से अपनी सेवाएं दे रहे हैं, लेकिन वे अभी भी अस्थायी ही हैं। ये सारे ही निम्न वर्ग के लोग हैं। इनका भला करो, तुम्हें दुआएं देंगे। हाँ राजेन्द्र तुम सत्य कहते हो। मैं अभी इस विभाग में दो वर्ष पूर्व ही आया हूँ और शायद एक वर्ष बाद मेरा स्थानान्तरण दूसरे विभाग में हो जाएगा। मैं जिस भी विभाग में रहा हूँ मुझे हमेशा अपने कर्मचारियों की चिन्ता रही है। लेकिन मेरा यह अनुभव रहा है कि जब-जब मैंने किसी को पदोन्नति दी है वह दुश्मन बनकर खड़ा हो गया है। पिछले विभाग में तो मेरा निजी सहायक ही मेरे विरुद्ध खड़ा हो गया था। यह मानसिकता मेरे भी समझ से बाहर है लेकिन मैंने यह अनुभव किया है कि जब तक आप किसी का भला नहीं करते तब तक वह आपको सम्मान देता रहता है और जैसे ही पदोन्नति हुई वह दुश्मन बन कर खड़ा हो जाता है। इसलिए अब मैं पदोन्नति और स्थायीकरण करके किसी को भी अपना दुश्मन नहीं बनाना चाहता।

54 झगड़ालू

मैंने आज तुम्हारे अस्पताल में फोन किया था। तुम्हारे ही मित्र डॉ. शर्मा ने फोन उठाया था। मैंने तुम्हारे बारे में जानना चाहा तो वे बहुत ही रुखाई से बोले कि मुझे कुछ पता नहीं, उसके बारे में? मैंने फिर पूछा कि क्या हुआ शर्माजी, नाराजी है क्या? वे बोले कि मैं उस व्यक्ति से बात नहीं करता। अब तुम बताओ कि तुमने क्या सभी से लड़ने का ठेका ले रखा है? अरे लेकिन मेरा उससे झगड़ा कब हुआ? पति बोले। फिर वह क्यों मुँह फुलाए था? मैं जानती हूँ कि तुमने ही कुछ किया होगा, शर्माजी तो सीधे आदमी है। कल वे मेरे वार्ड में मेरे रोगियों को देख रहे थे। उन्होंने रोगियों से कहा कि उस डाक्टर को कुछ नहीं आता। मैं दवाएं लिख देता हूँ तुम ये लेते रहो। लेकिन तुम डॉक्टर वर्मा से कुछ नहीं बोलना, उन्हें उनकी दवाओं के बारे में ही बताना। जब मैं राउण्ड पर गया तब रोगी की रेक पर दूसरी दवाएं थी। मेरे पूछने पर रोगी ने सच बता दिया। बस इतना ही हुआ। मेरी तो शर्मा से अभी बात भी नहीं हुई है। उसकी पोल खुलने के डर से पहले ही वह मुझसे नजरे छिपा रहा होगा और मेरे खिलाफ वातावरण बना रहा होगा।

55 अशिक्षित माँ

एक आत्मा एक दिन भगवान के सामने हाथ जोड़े खड़ी थी। भगवान मुझे माँ चाहिए। माँ के माध्यम से ही मैं शरीर धारण कर सकूंगा, धरती का उपभोग कर सकूंगा।

तथास्तु। भगवान ने कहा। लेकिन साथ ही एक प्रश्न भी कर दिया।

तुमको कैसी माँ चाहिए?

मेरे पास एक माँ है जो शिक्षित है और दूसरी है अशिक्षित।

शिक्षित तुम्हें ममता देगी, संस्कार देंगी, अच्छे, बुरे की समझ देगी।

अशिक्षित केवल ममता देगी। तुम जो भी मांगोगे बस वो देगी।

अच्छा और बुरा सब कुछ उसकी ममता के सामने टिक नहीं पाएगा।

बोलो तुम्हें शिक्षित माँ चाहिए या अशिक्षित?

कलियुग की आत्मा बोली कि अशिक्षित।

56 बेल का अस्तित्व

मेरे घर के बाहर एक जंगली शहतूत का पेड़ है, वह हमेशा हरे पत्तों से लदा रहता है लेकिन उसमें फल नहीं लगते। मेरे घर के अन्दर एक बोगेनवेलिया की बेल भी है जो अपना विस्तार लेती हुई शहतूत के पेड़ तक जा पहुँची है। अब शहतूत के पेड़ पर बोगेनवेलिया की बेल फूल रही है। चारों तरफ उसके सुंदर गुलाबी फूल बिखरे हुए हैं।

एक दिन शहतूत ने गर्व के साथ बोगेनवेलिया की बेल से कहा कि तू मेरे मजबूत तने पर चढ़कर फल-फूल रही है, यदि मैं नहीं होता तो तू कहाँ रहती? तुझे सहारा कौन देता?

बेल ने कहा कि मेरे कारण ही तू दूर-दूर तक दिखायी दे रहा है, यदि मैं नहीं होती तो तुझे कोई देखता भी नहीं। मेरे सुंदर फूलों के कारण ही तेरा अस्तित्व है। मेरा क्या है, मैं तो अपने विस्तार के लिए कोई न कोई मार्ग ढूँढ़ ही लूंगी।

57 भिखारी

एक भिखारी भीख मांग रहा था, 'भगवान के नाम पर दे दे बाबा, तेरा भला करेगा, प्रभु'। एक परिवार उस भिखारी से तंग आ चुका था, परिवार के एक सदस्य ने कहा कि दुर, दुर, दुर, दूर जाओ, कुछ काम क्यों नहीं करते?

भिखारी लेकिन वहाँ से टस से मस नहीं हुआ।

परिवार का मुखिया बोला कि पता नहीं कैसे लोग हैं, जो काम-धाम करते नहीं, बस सारा दिन मांगते ही रहते हैं।

इस बार भिखारी बोला कि साहब क्या केवल मैं ही मांगता हूँ, आप नहीं मांगते? क्या मैं तुमको भिखारी दिखता हूँ? इस बार मुखिया गुस्से में बोला। किसी भिखारी से इस प्रकार के प्रश्न की उन्हें उम्मीद नहीं थी।

भिखारी ने कहा कि साहब आप दीवाली पर लक्ष्मी मैया से भीख मांगते हैं और होली पर जलती होलिका से भी भीख मांगते हैं। रोज सुबह उठकर भगवान के सामने खड़े हो जाते हैं और शाम को सोने से पहले भी भगवान के सामने भीख मांगते हैं। भगवान भी आपको यही कहता है कि दुर, दुर, दुर। अपना कर्म क्यों नहीं करते? बस मांगते ही रहते हो।

58 बेटे ने पुस्तक को हाथ नहीं लगाया

निर्मला आज बहुत दुखी थी, वह फोन पर अपनी बहु को कोस रही थी। निर्मला ने सुनीता को बताया कि आज मेरा पूरा देश सम्मान करता है, मेरी पुस्तकों के लिए राष्ट्रपति तक ने मेरा सम्मान किया है लेकिन मेरे घर पर ही मेरी बहु ने आज तक मेरी पुस्तकों के बारे में नहीं पूछा है और न ही उसने कभी उन्हें हाथ लगाया है। अब तुम्हीं बताओ सुनीता, इससे बड़ा दुख और क्या हो सकता है? सुनीता ने कहा कि देखो निर्मला यह अपनी-अपनी मानसिकता का अन्तर है। हो सकता है कि उसे किताबों से कोई दिलचस्पी ही नहीं हो? उसे किताबें लिखना आपका प्रोफेशन लगता होगा और उसका इस ओर ध्यान ही नहीं होगा।

सुनीता तुम मुझे उपदेश मत दो, तुम्हारी बहु अच्छी है, तुम्हें सारे ही पारिवारिक सुख प्राप्त हैं इसलिए तुम मुझसे आज यह कह रही हो। जब तुम्हारे साथ भी तुम्हारी बहु ऐसा करती तब मैं बताती कि कितना बुरा लगता है कि वह आपकी प्रतिभा की कद्र ही नहीं करती। तुम्हारा तो बेटा भी तुम्हारा कितना ध्यान रखता है, मेरे ख्याल से तो वो ही तुम्हारी किताबों को प्रकाशित करवाने की व्यवस्था करता होगा।

अब सुनीता का भी धैर्य टूट गया, वह बोली कि हाँ मैं बेहद खुश हूँ। क्यों खुश हूँ, जानना चाहोगी? इसलिए कि मैं आज की पीढ़ी का सत्य जान गयी हूँ। वह उसी बात का सम्मान करती है जिससे उसे कुछ फायदा हो। इससे भी बढ़कर वह स्वयं का ही सम्मान करती है। अपने माता-पिता के गौरव की उन्हें रती भर भी चिन्ता नहीं है। मैं भी पहले दुखी होती थी लेकिन मैंने अनुभव किया कि इस पीढ़ी को यह भान ही नहीं है कि माता-पिता का सम्मान क्या होता है, तब हम अनावश्यक दुखी क्यों हों? अरे तुम्हारी बहु ना सही, बेटा तो तुम्हारी पुस्तकों के बारे में तुमसे चर्चा करता है। यहाँ तो बहु तो दूर की बात, मेरे बेटे ने तो पुस्तकों को आज तक हाथ भी नहीं लगाया और न ही इस बारे में कुछ पूछता है।

59 सेवा कार्य

एक बार एक व्यक्ति एक सामाजिक संस्था में गया। वह सामाजिक संस्था सुसम्पन्न लोगों की संस्था थी। व्यक्ति ने कहा कि आप समाज-हित में कार्य करते हैं, तो मैं भी कुछ दान देना चाहता हूँ। वह व्यक्ति साधारण वेशभूषा पहने था, जबकि उस संस्था में सभी सूटेड-बूटेड थे।

एक सदस्य ने कहा कि आप रहने दीजिए, आपने बड़ी मुश्किल से पैसा जोड़ा होगा आप क्यों इसे हमें देते हैं, हम किसी और से सहायता ले लेंगे।

उस व्यक्ति ने फिर आग्रह किया कि मैंने अपने खर्चों में से कटौति करके यह पैसा एकत्र किया है और मैं इसे अच्छे कार्य में लगाना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आप लोग तो हजारों रूपए सेवा में लगाते हैं लेकिन मैं तो कुछ रूपए ही दे सकता हूँ, तो कृपया आप इन्हें स्वीकार करें।

एक सदस्य ने धीरे से फुसफुसाकर अपने सचिव को कहा कि अरे ले क्यों नहीं लेते पैसे।

सचिव ने कहा कि कहाँ लगाएंगे इसका पैसा? हम तो केवल प्रतिमाह मीटिंग करते हैं और खाने में ही सारा पैसा खर्च कर देते हैं। सामाजिक कार्य करने के लिए तो हमारे पास पैसे ही नहीं बचते। अब इसका मुट्ठी भर पैसा लेकर कौन सा प्रोजेक्ट शुरू करेंगे? और कुछ बड़े पैसे वाले लोगों से चन्दा लाकर कुछ पैसा एकत्र भी कर लिया तब कौन सेवा कार्य करेगा?

तब हम यह संस्था संचालित ही क्यों कर रहे हैं? उस सदस्य का प्रश्न था। समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए ऐसी संस्था आवश्यक है। उन्होंने उस व्यक्ति के पैसे स्वीकार नहीं किए और व्यक्ति ने सोचा कि शायद गरीब आदमी सेवा कार्य नहीं कर सकता।

60 सत्ता

प्रकाश चन्द जी बोल रहे थे कि इन नेताओं को सत्ता की कितनी भूख रहती है। इनके बिना पत्ता भी नहीं हिलना चाहिए। यदि इनसे बिना पूछे कोई कार्य सम्पन्न हो जाए तो यह उस कार्य को बिगाड़ने में तुल जाते हैं।

सुरेश जी ने कहा कि आप सच कह रहे हैं, आजकल राजनेताओं का चरित्र ही यह रह गया है। सारी दुनिया को अपनी अंगुली से चलाना चाहते हैं। ये जो भी करे वो ठीक बाकि सब गलत। अरे राजनीति में सभी प्रबुद्ध हैं, किसी दूसरे के निर्णय को भी मानना चाहिए।

तभी कमल किशोर प्रकाश चन्द जी के पास आया। प्रकाश चन्द जी एक संस्था के राष्ट्रीय पदाधिकारी थी और कमल किशोर नगर का कार्यकर्ता। उसने कहा कि सर हम जो पर्यावरण पर कार्यशाला की बात कर रहे थे, उसका मैंने पूरा खाका तैयार कर लिया है।

ठीक है, मुझे घर आकर दिखा देना। फिर आगे की कार्यवाही करेंगे। प्रकाश चन्द जी ने कहा।

अरे सर, सुनिए तो सही, मैंने अभी अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष जी से बात की थी और उन्हें इस कार्यशाला के बारे में भी बताया और उन्हें आने को कहा। उन्होंने आने की स्वीकृति दे दी है।

अरे तुमने सीधे ही उनसे स्वीकृति प्राप्त कर ली, मुझसे पूछा तक नहीं। ऐसे कार्य करना ठीक नहीं है। उन्होंने तत्काल राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को फोन लगाया और कहा कि सर अभी वो कार्यशाला हम नहीं कर पाएंगे। जब भी करेंगे मैं आपको निवेदन करूंगा।

61 जिद

यार वाणी कितनी जिद्दी है। इसकी जिद के कारण खुद का कितना नुकसान कर रही है। किसी का कहना ही नहीं मानती। मैंने इसे कितना समझाया कि विनोद कुमार तुम्हारे पीछे पड़ा है, रोज ही तुम्हे बदनाम करने के तरीके ढूँढता है तो तुम उससे बात क्यों नहीं कर लेती।

निर्मल अपने मित्र सुरेश को बड़े दुखी मन से वाणी के लिए बोल रहा था। सुरेश ने कहा कि चलो एकबार अपन दोनों चलते हैं वाणी के पास। उनको समझाएंगे कि अनावश्यक बदनामी लेने से क्या फायदा?

वे दोनों वाणी के पास गए, बोले कि तुम विनोद से समझौता क्यों नहीं कर लेतीं?

किस बात का समझौता करूं, वाणी ने पूछा। यदि हमारे मध्य कोई झगड़ा होता या मैंने उसका कोई हक छीना होता तो मैं उससे बात भी करती लेकिन वह तो मेरी कुर्सी चाहता है। वह चाहता है कि मैं इसे बदनाम करके पद छोड़ने पर मजबूर कर दूं। जब इस पद पर कोई नहीं रहेगा तब वह अपनी इच्छा पूरी कर सकेगा।

62 हम लेते हैं तो देते भी हैं

शहर के एक पेड़ पर चिड़ियों का बसेरा था। वे सारी चिड़ियाएं भोर होते ही पेड़ को छोड़ देती और न जाने कहाँ चले जाती। फिर जैसे ही संध्या होती वे चहचहाट करती वापस आ जातीं। एक दिन एक राहगीर ने उनसे पूछ लिया — अरे चिड़ियाओं तुम रोज कहाँ जाती हो? सारा दिन कहाँ की खाक छानती हो? अपना बसेरा छोड़ने का तुम्हें डर नहीं लगता? कोई इस पर कब्जा कर लेगा तब?

चिड़ियाओं ने कहा कि अरे राहगीर, हम सारा दिन अपने दाने-पानी की खोज में अपने बसेरे को छोड़कर जाती हैं।

सारा दिन ही तुम खाती हो क्या? तुम्हारा तो पेट छोटा सा है फिर सारे दिन का भटकना? राहगीर ने फिर प्रश्न किया।

हम दाना-दाना चुगतें हैं, किसी एक खेत से या बगीचे से सारा ही खाना नहीं लेते। बस इतना भर एक जगह से लेते हैं जितना लेने पर खेत और बगीचे के मालिक को एतराज नहीं हो। जिस खेत और बगीचे से हम अपना दाना लेते हैं बदले में उसके कीड़े-मकोड़ों को भी हम खत्म करते हैं। हम इंसान की तरह नहीं हैं जो प्रकृति से केवल लेता ही है, देता कुछ नहीं। रही बात अपने बसेरे की तो हम पक्षी किसी के बसेरे पर कभी भी कब्जा नहीं करते, इसलिए हमें अपने बसेरे की चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

63 मक्कार लोग

मनोज को न तो पढ़ने में रुचि थी और ना ही लिखने में। वह घर का कार्य भी नहीं करता था और ऑफिस में भी सदैव मक्कारी ही करता था। लेकिन फिर भी वह बॉस लोगों के करीब बना रहता था। उसके साथी उससे हमेशा परेशान रहते थे। एक बार उनके ऑफिस में एक सेमिनार आयोजित की जानी थी। बॉस ने सारे ही अधिकारियों की एक मीटिंग ली। उसमें उन्होंने बताया कि सेमिनार में हमें ऐसे लोग चाहिए जो मंच को सम्भाल सकें। प्रेस में समाचार व्यवस्थित रूप से भेज सकें। भोजन से लेकर यातायात व्यवस्था के लिए हमें समर्थ अधिकारियों की आवश्यकता है।

एक-एक कर सभी श्रेष्ठ अधिकारियों को काम सौंप दिए गए। अन्त में बॉस ने कहा कि मनोज को भी इस समिति में ले लो।

सर! मनोज? वह किसी काम का नहीं है, उसे किस समिति में लेंगे?

उसे मुख्य समिति में ले लो, बॉस ने कहा।

अब बॉस ने समझाया कि देखो, कि कई ऐसे कार्य हैं जिन्हें मनोज जैसे लोग ही करते हैं। जैसे मंच पर बैनर लगाना है, कौन लगाएगा? मुख्यअतिथि आदि को भोजन कराना है, उनकी प्लेट लगानी है, कौन लगाएगा? मुझे भी रात-दिन एक व्यक्ति चाहिए जो मेरी अटेची उठा सके, तो कौन उठाएगा? अरे मनोज जैसे लोग भी उपयोगी होते हैं, इनकी भी समाज में आवश्यकता रहती है।

64 विषहीन मेढ़क

बरसात का मौसम प्रारम्भ हो चुका था। चारों तरफ हरियाली छायी थी। पत्तों पर बरसात की बूंदें मोती के समान चमक रही थी। कहीं झिंगुर चीख रहा था तो कहीं मच्छर भिनभिने लगे थे। तभी एक मेढ़क बड़ी जोर से टर-टर करता हुआ लॉन में उछलकूद करने लगा। उसकी लम्बी-लम्बी टांगें जब उछलती तो उसकी मांसपेशियां भी चमक उठती। तभी वहाँ एक छिपकली आ गयी, वो मेढ़क को उछलता देखकर बोली कि अरे मेढ़क इतना क्यों उछल रहा है? तेरी मेढ़की तो कहीं दिखायी देती नहीं, फिर किसे रिझाने को इतनी मेहनत कर रहा है। अपने हाथ और पैरों की मांसपेशियों का प्रदर्शन पुरुषों की तरह किसके लिए कर रहा है?

मेढ़क बोला कि मैं तो वर्जिश कर रहा हूँ जिससे मेढ़की का मुकाबला कर सकूँ। क्या करूँ पूरे साल मिट्टी में दबा रहता हूँ, जैसे-तैसे अपना गुजारा करता हूँ। बस बरसात में ही मुझे बाहर निकलने का अवसर मिलता है यदि इतनी उछलकूद ना करूँ तो कोई भी सांप मुझे निगल जाएगा। तुम्हारा क्या है तुम तो अपने साथ विष लेकर घूम रही हो तो तुम्हें तो कोई निगल नहीं सकता। बस हम बिना विष के लोगों को ही सारे पापड़ बेलने पड़ते हैं।

65 हिम्मत

एक महिला समुद्र किनारे बैठी थी, समुद्र गरजता हुआ कभी उसके पैर को छू लेता और कभी उसकी साड़ी को भिगो जाता। उसके हाथ में कुछ पत्थर थे वे एक-एक पत्थर को समुद्र में फेंक रही थी। वह भगवान से कह रही थी कि हे भगवान तू मेरी कौन सी परीक्षा ले रहा है? पहले तो तूने मुझे ऐसा पति दिया जो रात-दिन शराब में डूबा रहता है। मैंने फिर भी हिम्मत नहीं हारी और नौकरी करके अपना और अपने पति का पेट पालती रही। लेकिन तूने जो बच्चे दिए वे भी एकदम मक्कार हैं, ना तो पढ़ते हैं और ना ही कुछ काम करते हैं। अब तूने मुझे किस मुसीबत में डाल दिया है, मेरा नया बॉस मुझे पाने के लिए हमेशा मुझे परेशान करता है। मैंने तेरी इतनी पूजा की, व्रत रखे लेकिन तू मुझे दुख देता ही गया। वो तो मेरी हिम्मत थी जो मैं आज जीवट के साथ खड़ी हूँ नहीं तो इस समुद्र में डूबकर कभी की जान दे चुकी होती।

तभी कहीं से शोर सुनायी दिया। एक युवती जो अपंग थी, उसे चार गुण्डे परेशान कर रहे थे। गुण्डों ने उसके पैसे छीन लिए थे। वह युवती जोर-जोर से चिल्ला रही थी कि तुम मुझे कितना ही परेशान कर लो, मेरे पैसे छीन लो लेकिन तुम मेरी हिम्मत नहीं छीन सकते। यह मुझे मेरे भगवान ने दी है। जब तक मेरे भगवान मेरे साथ हैं यह हिम्मत मेरे साथ बनी रहेगी। उस महिला ने शेष बचे पत्थरों को अपनी झोली में भर लिया और हिम्मत के साथ खड़ी हो गयी।

66 कौन अधिक विषैला ?

एक जंगल में एक साँप रहता था। एक दिन एक आदमी उसके बिल के पास से गुजरा। साँप को देखकर वह कुछ ठिठका लेकिन साँप ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की। आदमी को कुछ आश्चर्य हुआ, उसने साँप से पूछा कि तुमने मुझे डसा क्यों नहीं?

साँप ने कहा कि अरे आदमी! हम केवल उसे ही डसते हैं जो हमारा दुश्मन होता है। हम उसे कभी भी नहीं डसते जो हमारा कुछ नहीं बिगाड़ते हैं। अपनी आत्मरक्षा के लिए ही हम दूसरों पर आक्रमण करते हैं।

लेकिन तुम अपने साथ विष लेकर घूमते हो, इसकारण तुम से सभी डरते हैं और खासतौर से आदमी।

हाँ उनका डरना लाजमी है। क्योंकि तुम आदमी उन पर भी आक्रमण करते हो जो तुम्हारे काम आते हैं, तुम्हारे लिए भला करते हैं। तुम्हारे पास विष ग्रन्थि तो नहीं है लेकिन तुम्हारी जुबान में ही विष भरा रहता है। तुम अपने मित्र पर, अपने परिवारजनों पर, अपने गुरु पर यहाँ तक की तुम अपने बच्चों की माँ पर भी आक्रमण करते हो। इसलिए हे आदमी! तुम मुझसे इसलिए डरते हो कि भगवान ने जब तुम्हें सभी से प्रेम करने के लिए बनाया है तो तुम विष बिखेरते रहते हो तो मुझे तो विषैला ही बनाया है।

67 पुण्य का दान

शारदा आज मन्दिर में पूजा करने आयी है। थाली में नारीयल, अगरबत्ती और प्रसाद भी है। पूजा करने के बाद अपने पुत्र को प्रसाद देती है। पुत्र प्रसाद ले तो लेता है लेकिन साथ में प्रश्न भी करता है। माँ आज तुम और पूजा? तुम तो कभी पूजा करती नहीं हो। फिर आज क्यों?

बेटा यह सच है कि मैं पूजा में विश्वास नहीं करती। क्योंकि मेरा मानना है कि जो भी हम कर्म करते हैं उन्हीं को देखकर भगवान हमें फल देता है। जब भी हम भगवान से कुछ मांगते हैं, भगवान हमारे सिंचित कर्मों में से हमारा देय दे देते हैं। इसलिए ही मैं भगवान से कुछ मांगती नहीं। लेकिन आज की पूजा करने का मेरा भाव तुम्हारे लिए कुछ मांगना था। तुम जानते हो कि मैंने कभी भी ना तो तुम्हारे पिता से कुछ मांगा है और ना ही तुम से। मैंने क्या मांगा अपितु तुम दोनों ने ही कभी सम्मान सहित कुछ नहीं दिया। मेरी अपेक्षा भी कुछ नहीं है। क्योंकि मैं सबसे बड़ा देनेवाला उसे ही मानती हूँ। लेकिन मैंने दुनिया में देखा है कि जो भी अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते उन्हें भगवान बरकत नहीं देते। तो मुझे यही डर सताता रहता है। मैं हमेशा तुम्हारी उन्नति की कामना करती हूँ लेकिन जिस तरह तुम अपने भोग-विलास में लगे हो और माता-पिता के अपने कर्तव्य को पूर्ण नहीं कर रहे हो, उससे डर लगता है कि कहीं भगवान तुम्हारी प्रगति नहीं रोक ले? इसलिए ही आज पूजा करने गयी थी कि मेरे बेटे को क्षमा करना और मेरे पुण्य भी इसकी झोली में डाल देना।

68 बस की टिकट

विजया ने आज अपनी बस यात्रा का टिकट कार्यालय में दिया है। भगवान की दया से उसके पास पैसे की कोई कमी नहीं है फिर भी मात्र 100 रुपए का टिकट उसने कार्यालय से वसूलने चाहे हैं। संस्था के अध्यक्ष के पास बात गयी और मंत्री के पास भी। सभी ने कहा कि यह तो हद है। लेकिन अध्यक्ष ने कहा कि ठीक है अभी उनका भुगतान कर दो, लेकिन भविष्य में उन्हें कभी भी प्रवास पर नहीं भेजना है। हम तो उन्हें प्रवास पर भेजकर उनका एक्सपोजर करते हैं उनका सम्मान करते हैं और वे 100 रुपए का बिल भी अपनी जेब से नहीं दे सकती?

जगदीश श्रीवास्तव सारी बात ध्यान से सुन रहे थे, उन्हें भी अच्छा नहीं लग रहा था। लेकिन वे भी चुप थे कि किसके पक्ष में बोलें? आखिर विजयाजी को क्या सूझी? क्या वे स्वयंसेवी संस्था में इसी मानसिकता के साथ काम कर पाएंगी? यहाँ तो बहुत कुछ देना होता है। लेकिन दो-तीन दिन बाद ही उनका सामना विजया से हो गया। वे बोले कि मैं एक बात जानना चाहता हूँ।

हाँ बोलिए। क्या जानना चाहते हैं। विजया ने विनम्रता से कहा।

आपने 100 रुपए की यात्रा का बिल कार्यालय में प्रस्तुत किया?

हाँ किया, क्यों कोई विवाद है क्या?

नहीं विवाद की बात तो छोड़िए बस मैं जानना चाहता हूँ कि आपने इतना छोटा बिल भी क्यों प्रस्तुत किया?

जगदीश जी मैं नौकरीपेशा महिला हूँ, मुझे कहीं बाहर जाने के लिए छुट्टियां लेनी पड़ती है। इसलिए बहुत आवश्यक होने पर ही मैं छुट्टी लेती हूँ। मुझे संस्था ने कई बार गाँवों में भेजा है। मैं हरबार छुट्टी लेकर और अपने पैसे से ही यात्रा करती रही हूँ। लेकिन अक्सर देखने में आता है कि वहाँ मेरे कोई कार्य नहीं होता है। इस बार भी मुझे तीन दिन के लिए प्रवास पर भेजा गया। मैंने बहुत मुश्किल से छुट्टियों का बंदोबस्त किया और जब मैं वहाँ गयी तो मुझे मालूम पड़ा कि मेरा वहाँ कोई कार्य ही नहीं था। मैं तीन दिन तक बेकार वहाँ बैठकर मक्खियां ही मारती रही। तब मुझे लगा कि शायद संस्था को मेरे समय और पैसे का ज्ञान नहीं है। मुझे बाहर भेजते समय उन्हें कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ता।

मेरा ही समय जाता है और मेरा ही पैसा जाता है। संस्था को तो केवल खाना पूर्ति करनी होती है कि हमने एक सदस्य को वहाँ भेज दिया। तब मेरे मन में विचार आया अपनी यात्रा के पुनर्भरण बिल का। क्योंकि यहाँ सारे ही अन्य कार्यकर्ता अपनी यात्रा का बिल प्रस्तुत करते हैं तो मैंने भी कर दिया। मुझे पता है कि भविष्य में अब मुझे प्रवास पर नहीं भेजा जाएगा और जब भी मेरी जरूरत होगी तब भी बहुत ही सोच समझकर मुझे भेजा जाएगा। क्योंकि तब उनका पैसा खर्च हो रहा होगा। अभी तक तो केवल मेरा समय और मेरा ही पैसा खर्च हो रहा था।

69 नकली मुठभेड़

डी.आई.जी. सुधांशु अपने कक्ष में आज अकेले बैठे हैं। तभी डी.वाय.एस.पी. शर्मा ने उनके कमरे में प्रवेश किया। शर्माजी आज बहुत खुश थे। उनकी प्रसन्नता छिपाए नहीं छिप रही थी। वे उत्साह में भरकर डी.आई.जी. को बता रहे थे कि सर! आज हमें बहुत बड़ी सफलता हाथ लगी है। हमारी टीम ने दो आतंककारियों को पकड़ने में सफलता हासिल की है। इतना ही नहीं हमने उन्हें सारे सबूतों के साथ पकड़ा है।

सुधांशु एकदम से अपनी कुर्सी से खड़े हो गए। वे इतनी जोर से चिल्लाए जैसे एकदम ही फट पड़ेंगे। तुमने कैसे सिद्ध कर दिया कि वे आतंककारी हैं? किसी आतंककारी के चेहरे पर लिखा होता है क्या कि वो आतंककारी है?

लेकिन वो सर कुख्यात है और उसकी हमें कई दिनों से तलाश थी। शर्मा ने विनम्रता से अपनी बात कही।

मैं कहता हूँ कि उन्हें अभी तत्काल छोड़ दो, यह मैं तय करूंगा कि कौन आतंककारी है और कौन नहीं।

शर्मा ने फिर अपनी बात कहनी चाही लेकिन उनकी लाल सुर्ख आँखों के सामने वे कुछ नहीं बोल पाए और कक्ष से बाहर आ गए। श्रीवास्तव ने उन्हें धीरज बंधाया और कहा कि सर छोड़ दीजिए आप भी उन आतंककारियों को। क्या पता उनके पास किसी बड़े नेता को फोन आ गया हो या फिर पेटी पहुंचा दी गयी हो। सभी का यहाँ दोगला चारित्र है। दिखते कुछ हैं और अन्दर से कुछ और होते हैं। हम तो हमेशा सर की ही कसमें खाते थे और आज इनका भी असली चेहरा देख लिया।

अभी कुछ ही समय व्यतीत हुआ था कि पड़ौसी प्रान्त के दो अधिकारी शर्मा और श्रीवास्तव के कक्ष में उपस्थित हुए। उन्होंने पूछा कि क्या मि. सुधांशु अपने कक्ष में हैं।

शर्मा ने कहा कि वे अपने कक्ष में ही हैं लेकिन आप लोग कैसे आए हैं?

हम उन्हें गिरफ्तार करने आए हैं।

शर्मा और श्रीवास्तव दोनों ही अवाक उन अधिकारियों का मुँह तकने लग गए।

वे समझ नहीं पा रहे थे कि ऐसा क्या हुआ है? फिर उन्होंने अपने आपको सम्भालते हुए प्रश्न किया कि किस कसूर में आप उन्हें गिरफ्तार करने आए हैं? उन पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अभी एक महीने पहले ही हमारे प्रांत की पुलिस के साथ मिलकर आपके इन डीआईजी ने दो कुख्यात आतंककारियों को एक मुठभेड़ में मार गिराया था।

तो?

उस मुठभेड़ को आतंककारियों के वकील ने नकली मुठभेड़ सिद्ध कर दिया है। अब हम क्या सुधांशु को भगवान भी नहीं बचा सकते।

70 पैतृक गुण

कल्पना अपने पुत्र मनन पर लगातार चिल्लाए जा रही थी। 'इस लड़के को कब अक्ल आएगी? मैंने तुझे कितनी बार समझाया है कि पैसे की कद्र करना सीखो। लेकिन तुम हो कि अपने दोस्तों को जब भी मन आता है अपना सामान दे देते हो।

मम्मी राजेश के पास पेन नहीं था तो मैंने उसे दे दिया था। मनन ने डरते हुए अपनी सफाई दी।

चुप करो, तुम ही धन्ना सेठ बने हो, मैंने तुम्हें किन मुश्किलों से पाला है, तुम्हें कुछ खबर है? मैं चाहती हूँ कि तुम एक कामयाब इंसान बनो और केवल अपने पर ध्यान केन्द्रित करो। यदि इसी प्रकार अपने दोस्तों की जरूरतों को पूरा करते रहे तो तुम कुछ भी हासिल नहीं कर पाओगे? अपने पिता की तरह एक नाकाबिल इंसान बनना चाहते हो क्या?

मेरा सारा ध्यान इसी में लगा रहता है कि तुम अपने पिता के कोई गुण नहीं सीखो। लेकिन मैं देख रही हूँ कि तुम वैसे ही नकारा बनते जा रहे हो। दूसरों की भलाई का कीड़ा भी तुम्हारे अन्दर घुसता जा रहा है। अरे बड़ा आदमी बनना है तो केवल अपने बारे में सोचो, दूसरों के बारे में सोच कर कुछ नहीं बना जा सकता। तुम देख रहे हो ना कि आज तुम्हारे पिता कहाँ खड़े हैं और मैं कहाँ हूँ? यदि उन्होंने भी मेरी बात मानी होती तो वो भी आज सफल इंसान होते। लेकिन उन्हें तो गंदगी में रहने का ही शौक था तो पड़े हैं आज वो वहीं। कल्पना पैर पटककर जाने लगती है तभी उसके कानों में मनन के शब्द सुनायी देते हैं। वो धीरे से बोल रहा था।

मम्मी, आप चाहे मुझे पापा से कितना ही दूर कर दो लेकिन मेरे जीन्स में जो पैतृक गुण समाए हुए हैं उनसे आप कैसे दूर करेंगी?

71 पूजा का प्रसाद

भँवरी सेठजी के यहाँ काम करती थी। घर का झाड़ू पोंछा, बर्तन, कपड़े सभी तो उसके जिम्मे थे। लेकिन उसके मांजे हुए जिन बर्तनों से रसोई बनती थी उस रसोई में उसे जाना मना था। ऐसे ही जिस पूजागृह को वह ही साफ—सुथरा रखती उसमें भी पूजा करने का उसको अधिकार नहीं था। सेठजी रोज ही पूजा करते और सेठानीजी प्रसाद बनाती। सेठजी मंत्रों का उच्चारण करते और सेठानी जी श्रद्धा भाव से प्रसाद का वितरण करती। भँवरी को भी प्रसाद मिलता लेकिन कहीं प्रसाद उसके हाथों को छू ना पाए इसका पूरा ध्यान रखती सेठानीजी। हाथ ऊपर करके उसे प्रसाद देती।

भँवरी को लगता कि मेरी गरीबी और सेठजी की अमीरी का राज बस यही पूजा है। सेठजी पूजा करते हैं तो भगवान प्रसन्न होते हैं और उन्हें अमीर बनाते हैं। मैं पूजा नहीं करती तो भगवान मुझसे प्रसन्न नहीं होते और मैं गरीब ही बनी रहती हूँ। उसका मन करता कि मैं भी पूजा करूँ, क्योंकि पूजा करने से ही मुझे भी सब कुछ मिलेगा। उसने एक बार सेठानीजी से पूछ ही लिया कि क्या मैं भी पूजा कर सकती हूँ?

सेठानीजी ने हिकारत भरी नजरों से उसे देखा और कहा कि पूजा को तुझे अधिकार होता तो आज तू ऐसी नहीं होती? पूजा का अधिकार भी भगवान ही देते हैं। अछूत का छुआ हुआ प्रसाद भगवान कैसे स्वीकार करेंगे?

भँवरी को समझ आ गया था कि वह अछूत है और उसे पूजा का अधिकार नहीं है।

एक रात को सेठानीजी की आँख खुली देखा कि पूजाघर में लाइट जली हुई है। एकबार तो वे डर गयीं लेकिन फिर हिम्मत करके दरवाजे से उन्होंने झाँका। देखती क्या है कि भँवरी स्नान करके, गीले बालों को फैलाकर भगवान के सामने हाथ जोड़कर खड़ी है। साकने दीपक भी जल रहा है और अगरबत्ती भी। सेठानी के तो काटो तो खून नहीं। उन्हें पूजाघर अपवित्र हुआ दिखायी देने लगा। तभी भँवरी के शब्द उन्हें सुनायी दिए, वो बोल रही थी कि भगवान तूने मुझे अछूत घर में जन्म दिया लेकिन देख आज मैं स्नान करके एकदम पवित्र

हो गयी हूँ। मेरे पास प्रसाद तो नहीं है लेकिन ये फूल मैं आपके लिए लायी हूँ, इन्हें ही आप प्रसाद समझकर ले लो और मेरी गरीबी भी दूर कर दो। भँवरी की आँखों से लगातार अश्रु भी बह रहे थे। वो भगवान से पूछ रही थी कि हे भगवान आप ही बताओ, मुझे सेठानीजी कहती हैं कि तुझे पूजा का अधिकार नहीं है लेकिन जिन बर्तनों से आपकी पूजा की जाती है उन्हें मैं ही साफ करती हूँ, जिन फूलों को आप पर चढ़ाया जाता है, उन्हें मैं ही तोड़कर लाती हूँ। तो आप तो उन्हें स्वीकार करते हैं ना?

सेठानीजी को ऐसा लग रहा था कि साक्षात देवी माँ उतर आयी हैं और वे ही पूजा कर रही हैं। अनागत भय से वे डर गयी और रसोई में जाकर प्रसाद की थाली ले आयी।

72 स्वाभिमान की रोटी

यार! सुधीर तूने कल रात को फिर कमीनी हरकत की। तू अपनी हरकतों से बाज क्यों नहीं आता? जिस बाप ने न केवल तुझे अपनी बेटी दी, अपितु सारे ही सुख के संसाधन भी दिए, उस पत्नी का अहसान मानने के स्थान पर तू उसे पीटता है? तुझे कितनी बार समझाया है कि यदि भाभी को गुस्सा आ गया और वे अपने पिता के पास वापस चले गयीं तब तेरा क्या होगा? यह ऑफिस, यह गाड़ी, यह मकान सभी कुछ तो उनका दिया हुआ है। तेरे पास तो अपना कहने के लिए कुछ भी नहीं है। यदि तुम्हारे विचार आपस में नहीं मिलते तो तू तलाक ले ले, लेकिन यह रोज-रोज की मारपीट तुझे तो सभ्यता की निशानी नहीं लगती। फिर मैं देख रहा हूँ कि भाभी काफी सहनशील है, वो हमेशा ही मुस्कराती रहती है।

मैं मानता हूँ यार कि तुझे इस प्रकार का व्यवहार नहीं करना चाहिए। लेकिन तुझे लगता है कि मैं बिका हुआ इंसान हूँ और इन सारे सुखों ने तुझे खरीद लिया है। मेरी आज इतनी भी हैसियत नहीं की मैं स्वाभिमान की दो रोटी कमा सकूँ? मैं अपनी पत्नी को नहीं अपितु स्वयं को रोज-रोज मार रहा हूँ। मैं उसे छोड़ भी नहीं सकता क्योंकि मैं उसे बेहद प्यार करता हूँ। वह तो गरीबी में रहने को तैयार है लेकिन मुझसे ही यह सुख नहीं छोड़ा जाता।

73 खुशियों का संग

मैं मीटिंग में जा रही हूँ और तीन घण्टें बाद आऊँगी, कविता ने अपने पति से कहा।

अरे तुम फिर चली वहाँ, कल तक तो तुम उन सबको गाली दे रही थीं कि वे सब नालायक हैं। तुम्हारे कोई काम नहीं आते। यहाँ तक की वे सब तुम्हारे दुख में भी भागीदार नहीं बनते। तुम ही कह रही थी कि जब तुझे अपने लिए कलेक्टर साहब के पास जाना था तो सभी ने मना कर दिया था कि हम तुम्हारे लफड़ों में नहीं पड़ते। फिर तुम आज वापस वहाँ उनके पास क्यों जा रही हो? कविता के पति ने उसे टोका।

यह सत्य है कि मैंने कसम खायी थी कि मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। क्योंकि ऐसी सामाजिकता किस काम की जो किसी की सहायता ही नहीं करे। यदि आज मैं मुसीबत में हूँ और लोग मेरी मदद ना करे तो फिर लोगों का क्या फायदा? लेकिन फिर मैंने विचार किया कि हमारे जीवन में दुख तो एकाध बार ही आते हैं और यदि कोई हमारे साथ खड़ा भी हो जाए तब भी उस दुख का सामना हमें ही करना पड़ता है, लेकिन जीवन में सुख और खुश रहने की आवश्यकता प्रतिपल रहती है। इसलिए जो मिल रहा है उसको क्यों समाप्त करना। नहीं तो अपनी खुशियों के लिए भी कोई नहीं मिलेगा।

74 विश्वास

विवेक चुपचास सोफे में धंसा है और मीनल ने जैसे आज कसम खायी है कि उसे चाँद-तारे दिखाकर ही रहेगी। मीनल बोल रही थी कि तुमने ही ठेका ले रखा है, सबका काम करने का? मैंने कितनी बार कहा कि वो तुम्हारा दोस्त विनोद एक नम्बर का मतलबी व्यक्ति है लेकिन तुम हो कि उसके किसी भी काम को मना नहीं करते हो। वो कहेगा कि यार विवेक मुझे ऑफिस छोड़ दे तो तुम उसके लिए पाँच मील का चक्कर लगा लोगे। अब तो यह हालात हो गए हैं कि हर कोई ही देखता है कि विवेक भाईसाहब आ रहे हैं तो उनसे ही काम कराओ। ये किसी को मना तो करते नहीं। तुमने कभी सोचा है कि ये तुम्हारे लिए क्या करते हैं? एक बार तुम नहीं थे, मुझे एक शादी में जाना था, विनोद को भी वहीं जाना था। मैंने उससे कहा कि मुझे भी लेते जाना, तो साफ मुकर गया। बोला कि भाभी मुझे और कहीं भी जाना है। इतने भोले बनोंगे तो ये सारे लोग तुम्हें ही लूटते रहेंगे आज जमाना इतने भोलों का नहीं है विवेक बाबू!

जब मीनल का गुस्सा कुछ शान्त हुआ तो विवेक बोला कि मैं जानता हूँ कि ये सारे ही लोगों पर तुम्हारा विश्वास नहीं है। मेरा भी नहीं है। इसलिए मैं इनसे किसी भी कार्य के लिए कहता भी नहीं हूँ। ये हमारे विश्वास के लायक नहीं हैं लेकिन यह क्या कम है कि हमारे ऊपर तो इन सभी का विश्वास है।

75 निपूता

सेठजी ने रमेश को आवाज लगाई, रमेश देख तेरे बापू आए हैं।

रमेश ने सेठजी को कहा कि उनसे कह दो कि मैं उनके लिए मर गया, अब मैं उनसे मिलने नहीं जाऊँगा। रमेश ने कडवाहट के साथ कहा।

अरे बेटा ऐसे नहीं बोलते, आखिर वे तेरे पिता हैं। घर में कहना-सुनना तो हो ही जाता है, जा उनसे जाकर मिल आ।

लेकिन रमेश नहीं गया। उसके बापू मायूस होकर वापस चले गए। सेठजी ने भी सोचा कि अच्छा ही हुआ जो बाप-बेटों में झगड़ा हो गया। कम से कम मेरे यहाँ से काम तो नहीं छोड़कर जाएगा।

दीवाली नजदीक आ रही थी। एक दिन रमेश ने सेठजी को कहा कि मुझे दीवाली पर घर जाना है।

सेठजी एकदम से चौंक गए। वे बोले कि उस दिन तो तेरे बापू तुझसे मिलने आए तो तूने उसकी शकल भी नहीं देखी और आज दीवाली पर गाँव जाने की बात कर रहा है?

सेठजी यह सच है कि मैं उनकी शकल भी नहीं देखना चाहता। उन्होंने मुझे आपके हाथों बेच दिया है। मेरा बचपन उन्होंने छीन लिया और अभी से काम पर लगा दिया। उन्होंने अपने स्वार्थ में अंधे होकर मुझे बेच दिया लेकिन मैं अंधा नहीं हूँ। मैं उन्हें निपूता नहीं करना चाहता।

76 राजनीतिज्ञ और साहित्यकार

अशोक और कमलेश दोनों अच्छे मित्र थे। पढ़ाई पूरी होने के बाद अशोक ने राजनीति में अपना भविष्य तलाशना शुरू किया जबकि कमलेश को लेखन का शौक था तो वह अपने कार्य के साथ लेखन भी करने लगा। दस साल बीत गए, अशोक ने अपनी पहचान राजनैतिक क्षेत्र में बना ली और वह एक जाना पहचाना नाम बन गया। कमलेश ने भी लेखन के क्षेत्र में अपना नाम किया और उसने भी अपने हस्ताक्षर साहित्य के क्षेत्र में कर दिए।

एक दिन उन दोनों के एक मित्र ने कमलेश से कहा कि यार, तुम दोनों ने एक साथ शुरुआत की थी और आज तुम कहाँ हो और अशोक कहाँ हैं? आज उसे सारा देश जानता है, हम कहीं भी अटक जाते हैं तो अशोक ही हमारे काम आता है। यार कमलेश, तुम भी राजनीति में ही जाते तो आज तुम्हारा भी नाम होता। कमलेश ने कहा कि यह बात सच है कि इन दस सालों में मैंने साहित्य के क्षेत्र में केवल अपने कदम ही जमाए हैं। मेरी अभी केवल दस पुस्तकें ही प्रकाशित हो पायी हैं। लेकिन यदि मैं आज भी चाहूँ तो राजनीति के क्षेत्र में दस साल नहीं केवल पाँच साल में कहाँ से कहाँ पहुँच सकता हूँ। क्योंकि वहाँ ऊपर जाने के रास्ते कई हैं। लेकिन यदि अशोक दो पुस्तकें भी पाँच नहीं दस साल में भी लिख दे तो मैं अपने आपको उससे छोटा मानने को तैयार हूँ।

77 बिन्दी और बिछिया

मम्मीजी आप भी ना बस हमेशा मुझे टोकती ही रहती हैं। अब आज के युग में भला कौन लड़की बिन्दी लगाती है और कौन बिछिया पहनती है? आप हमेशा पुराने जमाने की बात करती हैं। पता नहीं आप मुझे सलवार-सूट कैसे पहनने देती हैं? नहीं तो मुझे साड़ी में लिपटाकर रखतीं।

हाँ बेटा, तुम सही कह रही हो, मैं पुराने जमाने की ही बात कर रही हूँ। लेकिन तुम से एक बात पूछना चाहती हूँ क्या तुम्हें मेरा बेटा पसन्द नहीं है?

क्यों पसन्द क्यों नहीं है? अब यह क्या प्रश्न हुआ? बहु ने तमककर पूछा।

मैं इसलिए पूछ रही हूँ कि हमारे यहाँ बिन्दी और बिछिया शादीशुदा लड़कियां प्रयोग में लाती हैं। यह इसलिए कि समाज की बुरी नजर उन पर नहीं पड़े। क्योंकि समाज में ऐसे पुरुष भी हैं जो अविवाहित और विधवा लड़कियों को अपनी सम्पत्ति मानते हैं। विवाहित लड़कियों पर ऐसे लोग अक्सर अपनी कुदृष्टि नहीं डालते। अब तुम अपने आपको अविवाहित क्यों सिद्ध करना चाहती हो? क्या तुम्हें दूसरा विवाह करना है?

78 सोने के सिक्के

अंजलि अपनी सहेलियों के मध्य अपनी आप बीती सुना रही थी। वह बोली कि देखो कैसा जमाना आ गया है? अभी कुछ दिन पहले मेरे पति के पास रोगी बनकर एक व्यक्ति आया और बोला कि मैं सूरत में ठेकेदारी करता था। वहाँ मुझे एक पुराने मकान को गिराने का ठेका मिला। मकान को गिराते समय वहाँ मुझे सोने के सिक्कों से भरा एक कलश मिला। मैं परिवार सहित यहाँ आ गया हूँ। आप एक बार उन्हें देख लें और मेरी सहायता करें।

मेरे पति ने उससे कहा कि लाकर दिखाना सिक्के कैसे हैं? वह एक सिक्का लेकर आया। हमारे पास ही एक सुनार रहते हैं, उनको वह सिक्का दिखाया तो उन्होंने कहा कि यह तो शतप्रतिशत सोना है। लेकिन उस सिक्के पर अरबी में अल्लाह लिखा था। और वे नये थे।

दूसरे दिन वह आदमी वापस आया। मैंने इससे पूर्व पतिदेव से कह दिया था कि इस बार वो व्यक्ति आए तो मुझसे मिला देना। मैंने उससे कहा कि यह नए सिक्के हैं इसलिए पुरानी धरोहर नहीं है। यदि तुम सत्य बोल रहे हो तो यह किसी स्मलिंग का माल हो सकता है और तुम किसी मुसीबत में फस सकते हो। इसलिए तुम्हें इन्हें जिलाधीश को सौंप देना चाहिए। वह मेरे सामने से चला गया। लेकिन कुछ दिन बाद ही वह अपनी पत्नी के साथ आया और हमारे बैठकखाने में एक थैले में भरे सिक्कों को औंधा कर दिया। मैंने उससे कहा कि यह क्या है? यहाँ क्यों लाया है? मैंने तुमसे कहा था कि तुम कहो तो मैं जिलाधीश से कहकर तुम्हें ईनाम दिला सकती हूँ। मेरी डांट सुनकर वह चला गया।

दो दिन बाद ही अखबार में समाचार छपा कि नकली सिक्के बेचने वाला गिरोह सक्रिय है। तब मैंने अपने पतिदेव को कहा कि देखो वो सारे ही सिक्के नकली थे और वह आपको बेवकूफ बना रहा था। लेकिन एक बात तो है उस व्यक्ति में। उसने तुम्हें कैसे पहचान लिया कि तुम इतने भोले हो कि उसकी बात को सच मान लोंगे। वास्तव में ठगों को इंसानों की पहचान तो होती है।



डॉ. श्रीमती अजित गुप्ता

जन्मतिथि — 9 नवम्बर 1951/अलवर

पूर्व अध्यक्ष — राजस्थान साहित्य अकादमी

पूर्व सम्पादक : मधुमती (मासिक)

प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें —

काव्य संग्रह — 1. शब्द जो मकरंद बने 2. साँझ की झंकार

निबंध संग्रह — 1. अहम् से वयम् तक 2. बौर आए, बौराऊँ नहीं

उपन्यास — 1. सैलाबी तटबंध 2. अरण्य में सूरज

व्यंग्य संग्रह — हम गुलेलची

संस्मरणात्मक यात्रा वृत्तान्त — सोने का पिंजर....अमेरिका और मैं

सम्पादित कृति — मन के उन्मेष

शिक्षा/कार्यस्थल — आयुर्वेद महाविद्यालय, जयपुर से आयुर्वेद विषय की शिक्षा

प्राप्त कर आयुर्वेद महाविद्यालय, उदयपुर में चिकित्सा एवं अध्यापन कार्य। सन् 1997 में प्रोफेसर के पद से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद पूर्णतया लेखन एवं सामाजिक कार्य। पूर्व में कई मासिक पत्रिकाओं का सम्पादन।

सामाजिक उत्तरदायित्व—भारत विकास परिषद् की राष्ट्रीय चेयरमैन:परिवार संस्कार प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान

1. विश्व हिन्दी सम्मान—8वें विश्व हिन्दी सम्मेलन, न्यूयार्क में भारत सरकार द्वारा

2. जनजातीय क्षेत्र के लेखन के लिए — राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा 2002 में सम्मानित आदि

सम्पर्क सूत्र — 7 चरक मार्ग, उदयपुर — राज.

दूरभाष : 0294 2430465 मो. 9414156338

E.mail - ajit_09@yahoo.com blog - ajit09.blogspot.com

